ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 14 अक्टूबर 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 14 अक्टूबर 2018 से 20 अक्टूबर 2018

आश्विन शु. – 06 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 41, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में 'प्रेरणा पुंज' का उद्घाटन

हाल ही में डॉ. पूनम सूरी, पद्मश्री अवार्डी (अध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली) एवं श्रीमती मनी सूरी (डी.ए.वी. संस्था की प्रथम महिला सदस्य) हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर ने कॉलेज परिसर का दौरा किया। इस शुभ अवसर पर मन्त्रोच्चारण के साथ उनका स्वागत किया गया। कॉलेज प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन द्वारा डॉ. पूनम सूरी एवं श्रीमती मनी सूरी का हार्दिक अभिनंदन किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ऐसे देव पुरुष, सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व उम्दा इंसान का एचएमवी परिवार में हार्दिक अभिनन्दन है।

डॉ. सरीन ने संस्था की उपलब्धियों से अवगत करवाते हुए बताया कि कौशल योजना के अन्तर्गत संस्था में कौशल केन्द्र की स्थापना की गई है एवं संस्था को यूजीसी की ओर से पाँच करोड़ की ग्रांट प्रदान की गई है जिसके अन्तर्गत नवीन पाँच वोकेशनल कोर्स शुरू किए गए हैं। यहाँ पहले से बारह कौशल कोर्स चलाए जा रहे हैं एम.एच.आर.डी. के अन्तर्गत संस्था को उन्नत भारत अभियान के लिए चयनित किया गया है। डॉ. पूनम सूरी, एवं श्रीमती मनी सूरी ने अपने करकमलों से प्रेरणा पुंज का उद्घाटन किया। इसके अन्तर्गत स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा हंसराज एवं महात्मा आनंद स्वामी जी की प्रतिमाओं की स्थापना कॉलेज परिसर में की गई। इस अवसर पर पौधे का भी रोपण किया गया। कौशल केन्द्र की छात्राओं द्वारा निर्मित मॉडल ऑफ कौशल केन्द्र का मुक्त आकाश में गुब्बारे उड़ाकर उद्घाटन किया गया। डॉ. पूनम सूरी, ने अपने संभाषण में कॉलेज की नित्य नवीन उपलब्धियों हेतु प्राचार्या जी को बधाई दी एवं उन्नति के शिखरत्तम आकाश में नित्य आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं शुभ आशीष भी दी। उन्होंने प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर डॉ. रमेश आर्य, (उप प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली), श्री अरविन्द घई, (सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली), श्री जे.पी. शूर (डॉयरेक्टर पब्लिक स्कूलस–I), डॉ. आर.के. महाजन, वाइस चांसलर, डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी, डॉ. सुषमा आर्या, रजिस्ट्रार डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी तथा अनेक गणमान्य अतिथि, प्राचार्य तथा आर्यजन उपस्थित थे। श्री एन.के. सूद (उप प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी व चेयरमैन लोकल कमेटी) ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

डी.ए.वी. आउट्रम लाइन्स में राष्ट्रपिता के जीवन पर लगी प्रदर्शनी

डी.ए.वी. नर्सरी स्कूल, आउट्रम लाइन्स, दिल्ली में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर स्कूल के प्रांगण में स्कूल द्वारा महात्मा गाँधी के आदर्श जीवन को दर्शाने हेतु प्रदर्शनी, 'गाँधीः एक प्रेरणा' का आयोजन किया गया जिसमें कि स्कूल के छोटे–छोटे बच्चों ने गांधी जी के जीवन की मनमोहक प्रस्तुति अभिनय के माध्यम से की। इस अवसर पर बच्चों का उत्साहवर्धन करने हेतु एवम् इस प्रदर्शनी की शोभा बढ़ाने के लिए विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एस.के. शर्मा, डायरेक्टर

(पब्लिकेशन), डी.ए.वी. प्रबंधक समिति और स्कूल के चेयरमैन और मेनेजर, श्री एस.आर. अरोड़ा व श्री बलदेव जिंदल ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

जगन्नाथ जैन डी.ए.वी. गिदड़वाहा (पंजाब) में स्वच्छता पखवाड़ा

जगन्नाथ जैन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गिदड़वाहा में 'स्वच्छता ही सेवा' मुहिम शुरू की गई। विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री मोनिका खन्ना के नेतृत्व में स्वच्छता पखवाड़े के दौरान सभी अध्यापक व गैर अध्यापक स्टॉफ, कर्मचारियों एवम् विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया व साफ सफाई में भरपूर सहयोग किया। बच्चों को स्वास्थ्य व स्वच्छता के लिए प्रेरित करते हुए संदेश दिया गया कि आत्मानुशासन व मन की

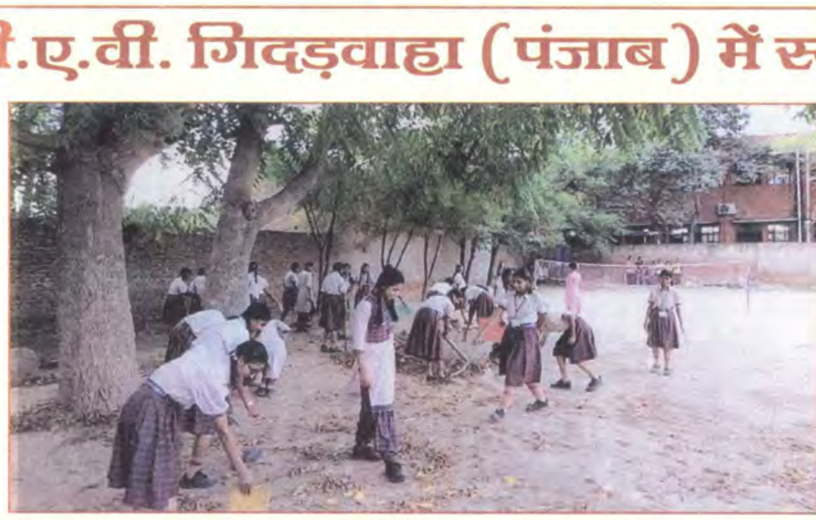

पवित्रता से ही हमारे जीवन में स्वच्छता आ सकती है जिससे हम अपने देश समाज व पूरे विश्व को बचाने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। विद्यार्थियों को हमेशा अपने आस–पास की साफ सफाई रखने के लिए प्रेरित किया गया। छठी कक्षा से लेकर आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अपनी कक्षा की सफाई की व अपने कमरों को खूबसूरती से सजाया। वहीं नवीं से बारहवीं वर्ग के विद्यार्थियों ने विद्यालय प्रांगण व बाहरी जगहों की भी सफाई की।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 14 अक्टूबर 2018 से 20 अक्टूबर 2018

हे सोम! हृदय-कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।
ऋग् ९.७०.९

ऋषिः रेणुः वैश्वामित्रः। देवता पवमानः सोमः। छन्दः जगती।

● **(सोम) हे सोम परमात्मन्! (तू), (वृषा) वर्षक (होता हुआ), (देववीतये) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (पवस्य) प्रवाहित हो, (इन्द्रस्य) आत्मा के, (हार्दि) हृदय–रूप, (सोमधानं) सोम–कलश में, (आविश) प्रविष्ट हो।, (बाधात्) बाधे जाने से, (पुरा) पहले, (नः) हमें, (दुरिता अति) पापचरणों से लंघाकर, (पारय) पार करदे। (क्षेत्रवित्) मार्ग का ज्ञाता, (विपृच्छते) विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, (दिशः) दिशाओं को, (आह हि) बताता ही है।**

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करने वाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछने वाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● महात्मा आनन्द स्वामी

इस अंक से ''**भगवान शंकर और दयानन्द**'' शीर्षक से प्रकाशित महात्मा आनन्द स्वामी जी की एक अन्य पुस्तक आरम्भ करने जा रहे हैं। इसमें वेद और ओंकार की व्याख्या इस प्रकार प्रस्तुत की है कि वह प्रत्येक धर्मानुयायी के लिए पठनीय और संग्रहणीय है।

हमारा विश्वास है कि यह कथा आर्य जगत् के सुधी पाठकों को रुचिकर लगेगी ।

पहला दिन

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता
शतक्रतो बभूविथ।
अघा ते सुम्नमीमहे।।

मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

परमात्मा की अपार कृपा है कि एक बार फिर आपसे कुछ बातें करने का अवसर प्राप्त हुआ है। पिछले कई वर्षों से संसार में उथल–पुथल मच रही है। कुछ व्यक्ति इस बात से दुःखित हैं कि सन् 1657 में प्रलय आएगी, परन्तु सन् 1657 से भयभीत होनेवाले क्या यह नहीं देख सकते कि प्रलय निरन्तर चली आ रही है? छः सहस्र वर्षों से संसार की दशा बिगड़नी आरम्भ हुई, इससे पूर्व कुछ शान्ति थी। परन्तु महाभारत से लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व शान्ति का अन्त होने लगा। इस अशान्ति का परिणाम था "महाभारत", परन्तु महाभारत से भी शान्ति तो न हुई! युद्ध से शान्ति कभी होती भी नहीं। दशा बिगड़ती चली जा रही है।

विदुर एक दिन महाराज धृतराष्ट्र के पास गए। धृतराष्ट्र बोले, "यह क्या हो गया है दुनियाँ को?" विदुर ने कहा, "राजन्! मोह के वशीभूत होकर मनुष्य लोभ, क्रोध और भय से पागल हुआ जाता है, चिन्ता की आग में जला जाता है। जब तक वह लोभ, क्रोध और भय से मुक्ति नहीं पाएगा, चिन्ता की अग्नि समाप्त नहीं होगी।"

एक कहानी सुनाई विदुर ने, "एक था घना जंगल। उसमें कितने ही विषैले और भयंकर जीव–जन्तु चिल्लाते फिरते थे–सिंह और हाथी, सर्प और अजगर, चीते और रीछ। महान् अन्धकार था उसके अन्दर। भागता हुआ एक व्यक्ति उसके निकट आया। एक बहुत बड़े शरीर वाली भयानक स्त्री को उसने वहाँ देखा। वहीं पाँच विषैले सर्प देखे। वह भय के कारण भागा और काँपता–हाँपता जंगल में दौड़ता चला गया। अँधेरे में एक तालाब में जा गिरा। परन्तु इससे पूर्व कि वह तालाब की उस तह में पहुँचता जहाँ पानी नहीं था, किनारे पर लगे एक वृक्ष की शाखा उसके हाथ में आ गई। उससे लटक गया वह। जब कुछ होश आया तो उसने देखा कि नीचे गहरे तालाब की तह में एक भयानक साँप फन फैलाए बैठा है। उसकी आँखें अंगारों की भाँति चमक रही हैं। ऊपर देखा कि छः मुख वाला हाथी उस वृक्ष को गिराने का प्रयत्न कर रहा है, जिसकी शाखा से वह चिपटा हुआ था। उसने यह भी देखा कि श्वेत और काले रंग के चूहे वृक्ष की शाखा को काट रहे हैं। ऊपर मृत्यु, नीचे मृत्यु। भय से उसका रोम–रोम काँप उठा। परन्तु तभी वृक्ष की दूसरी शाखा पर लगे शहद के छत्ते से बूँद–बूँद करके शहद चूने (टपकने) लगा और उसके होंठों पर गिरने लगा। उसने शहद को चखा। उसके स्वाद में खो गया। भूल गया नीचे के सर्प को, छः मुखवाले उस हाथी को जो ऊपर चिंघाड़ रहा था, उन श्वेत और काले चूहों को जो शाखा को काट रहे थे, उस जंगल में चिल्लाते हुए सिंहों को, फुंकारते हुए अजगरों को, शोर मचाते हुए पशुओं को। उस व्यक्ति की भाँति है यह मनुष्य। शाखा से लटका हुआ, शहद के स्वाद में सब–कुछ भूला हुआ है।"

धृतराष्ट्र ने कहा, "वह जंगल क्या है? वह स्त्री क्या है, जिससे डरकर वह भागा?"

विदुर ने कहा, "संसार वह भयानक जंगल है। इसमें रोग, शोक, अग्नि, भूकम्प, बाढ़ और लड़ाई–झगड़े के पशु घूमते फिरते हैं। इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सर्प रेंगते हैं। इसमें वह भयानक स्त्री है, जिसे बुढ़ापा कहते हैं। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से चिपटा है उसे दिन और रात्रि के श्वेत और काले चूहे काट रहे हैं। स्वयं वृक्ष को भी छः ऋतुओं वाला वर्ष हाथी बनकर धक्के मार रहा है। नीचे भयानक सर्प के रूप में मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबको भूलकर यह अभागा मनुष्य आशा और निराशा के शहद की मिठास में खो गया है। नीचे की मृत्यु

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

डॉ. भवानीलाल भारतीय : विनम्र श्रद्धाञ्जलि

● डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री

आर्य समाज और ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित सभी आवश्यक तथ्यों की जानकारी के स्रोत, वैदुष्य एवं विनम्रता के मूर्तिमान विग्रह, पं. लेखराम के उत्तराधिकारी और लेखनी के महाधनी प्रो. भवानीलाल भारतीय अपनी जीवन यात्रा (6 जून 1928 से 11 सितम्बर 2018) पूरी कर परलोक के लिए प्रस्थान कर गये। 165 पुस्तकों तथा लगभग 1500 लेखों के रचनाकार वरेण्य भारतीय जी की उल्लेखनीय कृतियाँ तथा पावन स्मृतियाँ ही अब शेष रह गई हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन चरित से सम्बद्ध ऐतिहासिक घटनाओं और तथ्यों के साथ–साथ सभी उपादान सामग्रियों के संकलन के लिए आजीवन परिश्रमी प्रो. भारतीय का एकमात्र व्यसन पढ़ना और लिखना था। दयानन्द की जीवनी और रचनाओं के विषय में जितना भी आज तक लिखा गया है उन सबको संकलित, प्रकाशित और सुचर्चित करते रहना यही उनकी खासियत थी। आर्य समाज के सिद्धांत और इतिहास को शोधपूर्ण रीति से पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं में निरन्तर प्रस्तुत करने में उनकी सर्वाधिक रुचि थी। प्रमाद, विश्राम और थकावट उन्हें छू तक नहीं पाई थी। उनके लिए ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ही सब कुछ (सर्वस्व) था। उनके लेखन का क्षितिज बहुत व्यापक है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, आर्य सिद्धांत, संस्कृत साहित्य, हिन्दी साहित्य, संस्मरण, जीवनी, आलोचना, सम्पादन और अनुवाद से लेकर आज तक के सभी आर्य लेखकों और विद्वानों के लेखकीय साहित्य का भी संग्रह और समीक्षण करना उनके ही बूते की बात थी।

विगत सात दशकों (70 वर्ष) तक फैला हुआ उनका लेखकीय व्यक्तित्व और कृतित्व किसी भी सुलेखक के लिए स्पृहा का विषय हो सकता है। देशी या विदेशी किसी भी लेखक के द्वारा की गई स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की आलोचना उन्हें सहन नहीं होती थी और उसका तत्काल उत्तर लिखकर वे आर्य पत्रों में प्रकाशित करते थे। पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय से लेकर पं. भगवद्दत्त, गंगाप्रसाद उपाध्याय, धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड, युधिष्ठिर मीमांसक और स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती प्रभृति सैंकड़ों आर्य विद्वानों की कृतियों से पाठकों को परिचित कराने में उनको व्यक्तिगत प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति होती थी। आज से 50 वर्ष पूर्व 1968 में उनकी पी.एच.डी. थीसीस 'ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत साहित्य को देन' पं. युधिष्ठिर मीमांसक की देख–देख में छपी थी। तब से आज तक ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध किसी का भी शोध प्रबन्ध डॉ. भारतीय या उनकी पुस्तकों की सहायता लिए बिना नहीं लिखा जा सका है। आस्ट्रेलिया के प्रो. जार्डन्स और अमेरिकी प्रोफेसर लेविलिन् से लेकर डॉ. प्रमा शास्त्री के शोध–प्रबन्ध 'स्वामी दयानन्द के हिन्दी लेखन का साहित्यिक, भाषिक और शैलीगत अध्ययन' जैसे अधुनातन अनुसंधान–ग्रंथ इसके प्रमाण हैं। सैकड़ों शोधार्थियों ने उनकी पुस्तकों से सामग्री संकलन की है और भावी शोधकर्मी भी डॉ. भारतीय और उनकी रचनाओं के अधमर्ण रहेंगे। संक्षेपतः ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के इतिहास, ग्रंथ, सिद्धान्त और विचारों के वे 'इनसाइक्लोपीडिया' (विश्वकोष) थे। लेखनी के धनी मसिजीवी डॉ. भारतीय को 175 पुस्तकों में से चुनिंदा रचनाओं का उल्लेख किये बिना यह भावाञ्जलि अधूरी ही रहेगी। अतः भारतीय जी की कतिपय कृतियों का नाम और प्रकाशन वर्ष प्रस्तुत है–

1. नवजागरण के पुरोधा : महर्षि दयानन्द सरस्वती, प्रथम संस्करण वर्ष 1983 , द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण वर्ष 2009
2. ऋषि दयानन्द : सिद्धान्त और जीवन दर्शन वर्ष 2013
3. स्वामी दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य प्र. सं. 1949, दि. सं. वर्ष 2002
4. महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय, वर्ष 1957
5. महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द– तुलनात्मक अध्ययन, वर्ष 1975, 1986,1995 (उड़िया अनुवाद 1994)
6. दयानन्द साहित्य सर्वस्व, वर्ष 1983
7. ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रसंसक और सत्संगी, वर्ष 1986
8. ऋषि दयानन्द प्रशस्तिकाव्यम् (संस्कृत पद्य संग्रह) वर्ष 1986
9. ऋषि दयानन्द सरस्वती : व्यक्ति, विचार और मूल्यांकन वर्ष 2000
10. ऋषि दयानन्द सरस्वती : पश्चिम की दृष्टि में वर्ष 2001
11. ऋषि दयानन्द सरस्वती : सम सामयिक पत्रों में, वर्ष 2003
12. ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन, वर्ष 2001
13. ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन, वर्ष 1968
14. वेदाध्ययन के सोपान, वर्ष 1974
15. वैदिक स्वाध्याय (शोधपूर्ण निबन्ध) वर्ष 1992
16. ऋग्वेदीय यजुर्वेदीय–सामवेदीय–अथर्ववेदीय अध्यात्म शतक (प्रत्येक की वेद 100–100 ऋचाओं की भावपूर्ण आध्यात्मिक व्याख्या), वर्ष 1999–2000
17. आर्य समाज के वेदसेवक विद्वान्, वर्ष 1974, 2007
18. उपनिषदों की कथाएँ, वर्ष 1983, 1995, 1996
19. स्वामी दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्त, वर्ष 1982
20. विश्वधर्मकोशः सत्यार्थ प्रकाश, वर्ष 1978, 2002
21. आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी, वर्ष 1970, 1982
22. परोपकारिणी सभा का इतिहास, वर्ष 1975
23. आर्य समाज का अतीत और वर्त्तमान, वर्ष 1975
24. आर्य समाज अतीत की उपलब्धियाँ और भविष्य के प्रश्न, वर्ष 1978
25. आर्य समाज के पत्र और पत्रकार, वर्ष 1981
26. आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय (सन्दर्भ ग्रन्थ), वर्ष 1985
27. आर्य समाज का इतिहास (पंचम भाग–साहित्य खण्ड), वर्ष 1986
28. समग्र क्रान्ति का सूत्रधार–आर्यसमाज, वर्ष 2001
29. हिन्दी काव्य को आर्य समाज की देन, वर्ष 2000
30. भारत के नारी–जागरण में आर्यसमाज की भूमिका, वर्ष 2000
31. आर्य लेखक कोश (सन्दर्भ ग्रन्थ), वर्ष 1991
32. जर्मनी के संस्कृत विद्वान्, वर्ष 2000
33. शुद्ध गीता, वर्ष 1966
34. श्रीमद्‌भगवद्गीता : एक सरल अध्यन, वर्ष 1966
35. श्रीकृष्णचरित, वर्ष 1958, 1991, 1998
36. ब्रह्मवैवर्त्तपुराण : एक समीक्षा, वर्ष 1961

सम्पादित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

37. दयानन्द दिग्विजयार्क (गोपालराव हरि शर्मा), वर्ष 1974, 1983
38. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र (पं. लेखराम), वर्ष 1984, 1988
39. श्री दयानन्द चरित (सत्यबन्धु दास) बांग्ला का हिन्दी अनुवाद, वर्ष 1986
40. युगप्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द (लाला लाजपत राय), वर्ष 1998, 2005
41. ऋषि दयानन्द के चार लघुजीवन चरित, वर्ष 1998
42. दयानन्द चरित, प्रथम संस्करण (देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय), वर्ष 2000
43. ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन, वर्ष 1982
44. महर्षि दयानन्द की आत्मकथा, वर्ष 1975, 1983
45. पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी), वर्ष 1976, 1985
46. चतुर्वेद विषय सूची (स्वामी दयानन्द सरस्वती), वर्ष 1971
47. भागवत खण्डनम् (स्वामी दयानन्द सरस्वती), वर्ष 1999

अनूदित/सम्पादित ग्रन्थ

48. आर्यसमाज (लाला लाजपत राय), वर्ष 1982, 1994, 2001
49. योगिराज श्रीकृष्ण (लाला लाजपत राय), वर्ष 1998
50. लाला लाजपत राय की आत्मकथा, वर्ष 2005
51. लाला लाजपतराय ग्रन्थावली (1 खण्ड)।
52. स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (1 खण्ड) इस ग्रन्थावली में स्वामी श्रद्धानन्द की अंग्रेज़ी पुस्तक 'Inside Congress' का हिन्दी अनुवाद तथा स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव की 'The Arya Samaj its Detractors : A Vindication' अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'आर्यसमाज और उसके निन्दक : एक प्रतिवाद' भी शामिल है।
53. मीमांसा दर्शन (उत्तरार्ध) श्री मयाशंकर शर्मा कृत मीमांसा दर्शन के गुजराती अनुवाद का हिन्दी अनुवाद।
54. सूरज बुझाने का पाप (श्री केशुभाई देसाई) गुजराती भाषा में ऋषि दयानन्द के जीवन चरित को लक्ष्य कर लिखे गये उपन्यास का हिन्दी अनुवाद 1994 ई0।

डॉ. भारतीय ने अपनी प्रतिनिधि रचना 'नवजागरण के पुरोधा : महर्षि

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

अग्निदेव के समीप चलते हैं

● भद्रसेन

ओम् उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।।

ऋग्वेद 1,1,6

शब्दार्थ – हे दोषावस्तः **अग्ने!** = रात–दिन जगमगाने वाले **अग्निदेव! वयम्** = हम **दिवे** = दिन प्रतिदिन **नमः भरन्तः** = नमन भाव से भरकर **धिया** = बुद्धि पूर्वक **त्वा** = आप के **उप–अ–आ–इमसि** = समीप आते हैं।

व्याख्या – हे अग्निवत् प्रसिद्ध देव! प्रकाशमान प्रभो! आप ब्राह्य प्रकाश और आन्तरिक ज्ञान रूपी प्रकाश कभी कभार ही नहीं अपितु रात दिन देते हो। आप का प्रत्येक प्राकृतिक कार्य लगातार चलता रहता है। अतः हम आप की इन कृपाओं, आभारों को प्राप्त करके अनुभव करते हैं, कि हम यदा–कदा ही नहीं, कि आज शिवरात्री है या जन्माष्टमी है, अतः आपका स्मरण करें। अपितु हम तो अनुभव करते हैं, कि आप प्रतिदिन प्रतिक्षण हमें लाभान्वित करते हो। अतः नमन भाव से भरकर आपका स्मरण करें। जैसे कि किसी वृक्ष पर जैसे–जैसे फल बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे वह कृतज्ञता से झुकता जाता है। ऐसे ही हम भी आप की कृपाओं का अनुभव करते हुए अपनी पूरी विचार शक्ति, सोच से पूरी तरह से आप की निकटता से निकटता को प्राप्त हो अनुभव करें।

परमदेव! आप तो अभौतिक हैं, पूरी तरह से पूर्णकाम, आप्तकाम हैं। आप ही सबकी कामनाएँ पूर्ण करते हैं। फिर आप को भौतिक पदार्थों में क्यों उलझाएँ? अपनी मनस्तुष्टि के लिए भौतिक पदार्थों से उपासना क्यों करें? तेरी समीपता, अनुभूति हम हार्दिक भावों, मानसिक विचारों, बौद्धिक तरंगों से ही करें। क्योंकि भौतिक पदार्थ अपनी भौतिकता (अङ्ग रूप में या उनकी अपेक्षाओं) की साजासज्जा में उलझाये रखते हैं। अर्थात् भौतिक को ही भौतिक वस्तुओं की अपेक्षा होती है। प्रभु तो हर प्रकार से अभौतिक है। अतः ईश्वर की उपासना की वेला में हम स्थूल चीजों की व्यवस्था, व्यवहार में ही न उलझे रहें। सदा विचारों, भावनाओं द्वारा आप से जुड़ने का प्रयास करें।

हे आधारों के आधार, विचारों के धाम! जब हम विचारशील प्राणी हैं, तो हमारी उपासना का यह कार्य केवल रिवाज पूरा करने के लिए ही नहीं हो, अपितु पूरी तन्मयता से हम भावनाओं से भरकर योजना पूर्वक करें।

हे अन्तर्यामिन्! अन्तःतम! आप तो हमारे साथ हृदय–देश में भी विराज रहे हैं। 18,61 **हृद्देशऽर्जुन तिष्ठति।** गीता अतः हमें ऐसी भावनायें दो, कि हम सदा सर्वथा आप को अङ्ग–सङ्ग अनुभव करें। आप तो पूरी तरह से हमारे मित्र, हितचिन्तक, सर्वरक्षक रूप में हर समय हमारे साथ हैं। अतः जब भी विपत्ति, घबराहट अनुभव करें। तब–तब आप का ही स्मरण करें। यतो हि संसार विविधताओं, विपरीत परिस्थितियों से भरपूर है। यहाँ मैं ही अकेला नहीं रहता, अतः आपाधापी, मैं पहले के कारण संघर्ष, स्पर्धा होना स्वाभाविक है। अतः ऐसी स्थिति में भोजन की तरह शक्ति प्राप्त करने के लिए आत्मिक आहार रूप में उपासनार्थ आप से जुडूँ, आप की निकटता की अनुभूति के लिए भक्ति की तरंग से तरंगित होने का यत्न करूँ।

इस प्रकार आत्मिक आहार से शक्ति प्राप्त कर के जीवन संघर्ष में सफल होने का यत्न करूँ। कभी भी आप से दूर न होंऊ। अपितु निकट से निकट होने का ही उपासना से प्रयास करूँ।

विशेष – केवल किसी वस्तु की प्राप्ति का ही महत्त्व नहीं है, अपितु उस–उस वस्तु को प्राप्त करके उसके सदुपयोग का विशेष महत्त्व है। यथा भोजन शक्ति देता है, स्वादु होता है। पुनरपि हर समय उसका सेवन किया जाए, यह बात महत्त्व की नहीं है। विशेष बात तो यह होती है, कि उस भोजन को पचाकर शक्ति जहाँ प्राप्त की जाए, वहाँ उस शक्ति का सदुपयोग भी हो। तभी सार्थकता, कीर्ति किसी को प्राप्त होती है।

भक्ति, उपासना आत्मिक आहार है। अतः उसमें भाव–विभोर होने से व्यक्ति दुर्भावनाओं, दुश्चिन्तन से बचा रहता है। पर स्वस्थता की दृष्टि से दिनचर्या की व्यवस्था, व्यस्तता भी विशेष अपेक्षित है।

अग्नि अति प्रसिद्ध है, उसको सब जानते हैं। अतः परिचय की अपेक्षा नहीं, उसके अनेक रूप प्रचलित हैं। तभी मुहावरों में अग्नि शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे कि हमारी भाषाओं में अग्नि, आग से जुड़े अनेक शब्द प्रचलित हैं। लोकोक्तियों में प्रयुक्त ये शब्द प्रकरण के अनुरूप विविध अर्थों को दर्शाते हैं।

ओम् स नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।। ऋग् 1,1,9

शब्दार्थ – **अग्ने!** अग्रणी देव! **सूनवे** = सन्तान के लिए पिता **इव** = पालक की तरह **स** = सर्वप्रसिद्ध आप = **(त्वं) नः** = हम सब के लिए **सु–उपायनः** = सरलता से **प्राप्य भव** = बनो और **नः** = हमें सद सर्वथा **स्वस्तये** = कल्याण के पथ पर **सचस्व** = प्रवृत्त करो।

भावार्थ – हे अङ्ग – अङ्ग में समाये अग्रणी देव! आप सर्वविध हैं। अतः हमारी अपेक्षा आप ही प्रत्येक प्रकार से पूरा जानते हो, कि हमारा कल्याण कब, कहाँ, किस में है।

व्याख्या – हम संसारी जीव हैं। हर समय संसार के भौतिक व्यवहारों में मग्न रहते हैं। इसी रूप में अपने जीवन को जीते हैं और इसी तरह ही जीना चाहते हैं। अतः उसी भावना में भरकर आप से प्रार्थना करते हैं। हे अग्निदेव! आप ही आगे से आगे हमारी जीवन नैया को चलाने वाले हैं।

हम चाहे स्वयं पुत्र होते हुए इस भावना को इतना अनुभव नहीं करते, कि हमारे पिता हमारे लिए कितनी तन्मयता, अपनेपन से हमें सुलभ होते हैं और हमारे कल्याण के लिए अहर्निश क्या–क्या करते रहते हैं?

प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार जब कभी कोई स्वयं पिता बन जाता है और अपने लाड़लों के लालन–पालन में व्यस्त होता है। वह अपने आपको अपने बच्चों के लिए कितना सुलभ बना देता है। तब वह अपने आप को भूलाकर अपनी अपेक्षाओं की चिन्ता छोड़कर अपने महत्त्व को ओझल करके सन्तानों की सुविधाओं के लिए, अपनों के कल्याण में ही अपने आपको निमग्न कर देता है।

अग्नि की तरह सर्वप्रसिद्ध! आप ही संसार में सब से अधिक प्रसिद्ध, मान्य हैं। आप ही प्रत्येक प्राणी के उत्पादक, पालक हैं। अतः आप का प्रत्येक प्राकृतिक कार्य हम सबके पालन–पोषण के लिए ही हो रहा है। एतदर्थ आप इस संसार के कण–कण में समाये हुए हैं। अपनी सर्वव्यापकता से इस सारी व्यवस्था को चला रहे हैं। इतना ही नहीं, अपितु आप तो हमारी सुविधा के लिए हमारे हृदय में भी विराजमान हैं। अतः आप हमारे हित की दृष्टि से सदा सुलभ रहते हैं।

हम चाहे अपनी थकावट को मिटाने के लिए 'घोड़े बेच कर सोना' की कहावत की तरह पूर्ण निश्चिन्त होकर सो जायें। पर आप तो तब भी जागते रहते हो। हमारी सुलभता में कभी ओझल, दूर नहीं होते। तभी तो अपनी साधना के आधार पर सिद्धजन कह उठते हैं, कि तेरी अनुभूति इतनी सुकर, सुखकर है, कि 'गरदन झुकाई' और अनुभूति करली या हो गई। हम अपने आप में चाहे कितने मस्त रहें, पर आप की ओर से दर्शन की सुलभता में कोई बाधा, अड़चन नहीं है।

अतः जैसे एक पिता अपनी सन्तानों के लिए सरलता से प्राप्य होता है और वह सदा सर्वथा उनकी अच्छाई में जुटा रहता है। अपने बच्चों को भले कार्य करने की ही प्रेरणा देता है। केवल शब्दों से ही नहीं, अपितु हार्दिक भावों से भरकर दिलों–जान से पूरा यत्न करता है। ऐसे ही इस भौतिक अनुभूति की तरह हे परम पिता! आध्यात्मिक साधना से अभौतिक स्तर पर भी हम सक्षम हों।

निःसन्देह इसके लिए सबसे प्रथम अपेक्षा है, कि हम अबोध शिशु की तरह निर्दोष, निश्छल हों। अन्यथा कुछ भी स्पष्ट नहीं हो सकता। स्वच्छ, निर्मल दर्पण में ही निश्चलता की स्थिति में किसी की छवि स्पष्ट होती है। स्थिर, स्वच्छ जल में ही प्रतिबिम्ब प्रत्यक्ष होता है। निर्मल, निश्छल के प्रति ही कोई किसी प्रकार की कृपा वर्षा करता है। कपटी के प्रति धोखा देने की आशंका ही उभरती है।

विशेष – **'पितेव सूनवे'** उपमा वाक्य द्वारा जहाँ सरलता–सरसता से क्रिया स्पष्ट होती है, वहाँ प्राणी जगत का अपनी परम्परा के प्रति शाश्वत स्नेह भाव भी अभिव्यक्त होता है।

182 शालीमार नगर
होशियारपुर, पंजाब

☞ पृष्ठ 03 का शेष

डॉ. भवानीलाल भारतीय ...

दयानन्द सरस्वती' (द्वितीय संस्करण, 2009 ई0) के उपसंहार में लिखा है–

मेरी चेष्टा थी कि मेरा पुस्तक संग्रह स्वामी दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज विषयक ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकार के दस्तावेजों का अद्वितीय संग्रह हो। मैं इस कार्य में सफल हुआ। मेरे पुस्तकालय में एतद् विषयक लगभग पाँच हजार ग्रन्थ तथा पत्र–पत्रिकाओं की पाँच सौ दुर्लभ फाइलें थीं।

सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न बाईस भाषाओं में अनुवाद, उनके अन्य ग्रन्थों के विभिन्न संस्करण, टीका, व्याख्या आदि ग्रन्थों के अतिरिक्त स्वामीजी के जीवन–चरित बहुसंख्या (शताधिक) में थे। अब यह दुर्लभ ग्रन्थ–संग्रह दण्डी विरजानन्द के स्मारक रूप में कुरुक्षेत्र में बनाये जानेवाले एक शोध ग्रन्थालय को दे दिया गया है। तथापि प्रकाशित–अप्रकाशित पुरा वृत्त, दस्तावेज तथा पत्रों के कतरनें लगभग बीस वेष्टनों (बस्तों) में मेरे पास हैं, जिनका उपयोग स्वामी दयानन्द के अध्ययन तथा तद्विषयक लेखन के लिए भावी शोधकर्त्ताओं एवं लेखकों द्वारा किया जा सकता है।

डॉ0 भारतीय जैसे मनीषी लेखकों के लिए ही संस्कृत की यह सूक्ति चरितार्थ होती है– **कीर्त्तिरक्षरसंयुक्ता चिरं निष्ठति भूतले।**

सम्पर्क–चलभाष: 9415185521

कुसीदि ऋषिका

● शिवनारायण उपाध्याय

कुसीदि ने ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में कार्य किया है। हम तीनों वेदों में उनके द्वारा किए गए कार्यो का संक्षेप में अध्ययन क्रमानुसार करने जा रहे हैं। कुसीदि का संबंध काण्व वंश से है। ऋग्वेद का लगभग आठवाँ सम्पूर्ण मण्डल कण्व परिवार को ही समर्पित है। ऐसे में कुसीदि ऋग्वेद मण्डल 8 के सुक्त 81, 82 व 83 की ऋषिका हैं।

सूक्त 81 में कुल 9 ऋचाएँ है। इस सूक्त में ईश्वर स्तुति और ईश्वर की प्रार्थना के अतिरिक्त सृष्टि के विभिन्न पदार्थों का उचित उपयोग का वर्णन है। कुछ आलंकारिक वर्णन भी हैं।

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभम् सङ्गृभाय।
महा हस्ती दक्षिणेन ।। ऋ.8.81.1.

पदार्थ– (**इन्द्र**) हे परमैश्वर्य शाली परमात्मन्। जिस कारण तू (**महा हस्ती**) महा शक्तिशाली है, इसलिए (**दक्षिणेन**) महा बलवान् हाथ से (**नः**) हमारे लिए (**क्षुमन्तम्**) प्रशस्त (**चित्रम्**) चित्र–विचित्र नाना प्रकार युक्त (**ग्राभम्**) ग्रहणीय वस्तुओं को (**सङ्गृभाय**) संग्रह कीजिए।

भावार्थ–इस ऋचा में परमात्मा से ज्ञानादि धन की याचना की गई है।

अगली ऋचा में इसी विषय का विस्तार हुआ है।

विद्महित्वा तुविकूर्मि तुविदेष्णं तुवीमधम्।
तुविमात्रमवोभि ।। ऋ. 8.81.2.

पदार्थ– हे इन्द्र। (**अवोभि**) आपकी रक्षा द्वारा हम मनुष्य (**विद्महि**) इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि (**त्वा**) तुम (**तुविकर्मिम्**) सर्व कर्मा महाशक्ति (**तुविदेष्णम्**) सर्वदाता, महादानी (**तुविमधम्**) सर्वधन (**तुविमात्रम्**) सर्वव्यापी है। ऐसा तुझे हम जानते हैं अतः हम पर कृपा कर।

परमात्मा सर्वशक्तिमान् है और अपने कार्य में परम स्वतंत्र है।

नहि त्वा शूर देवान न मर्तासो दित्सन्तम्।
भीमं न गां वारयन्ते ।। ऋ. 8.81.3.

पदार्थ– (**शूर**) हे महावीर प्रभो। (**दित्सन्तम**) इस जगत् को दान देते हुए (**त्वा**) तुझको (**देवाः नहि वारयन्ते**) देव गण निवारण नहीं कर सकते। (**न**) नहीं (**मर्त्तासः**) मनुष्यगण ही तुझे निवारण कर सकते। (**न**) जैसे (**भीमम्**) भयानक (**गाम्**) साँड को रोक नहीं सकते।

आ नो भर दक्षिणे नाभि सव्ये प्र मृश।
इन्द्र मा नो वसोर्निभोक ।। ऋ. 8.81.6.

पदार्थ– हे बलवान् (**दक्षिणेन**) दक्षिण हस्त से (**नः**) हम लोगों को (**आभर**) धन धान्य से पूर्ण कर (**सव्येन**) बाएँ हाथ से (**अधि प्रमृश**) चारों ओर से रक्षा कर। हे इन्द्र। (**नः**) हम लोगों को (**वसो**) धन और वास (**मा, नि, भाक्**) अलग मत कर।

भावार्थ– हे प्रभो! हम लोगों को दाहिने हाथ से धन धान्य से पूर्ण कर दे और बाएँ से चारों ओर से हमारी रक्षा कर। हम लोगों को कभी भी धन और निवास स्थान से रहित मत कर।

सब मनुष्यों को समान अधिकर मिलना चाहिए।

वेद कहता है–

इन्द्र य उ नुते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः।
अस्माभिः सु तं सनुहि।। ऋ. 8.81.8.

पदार्थ– हे इन्द्र! (**यः उ**) जो (**वाजः**) विज्ञान और धन (**विप्रेभिः**) बुद्धिमान् जनों से (**सनित्वः**) तेरे निकट हैं। (**त**) उस धन को (**अस्माभिः**) हम लोगों के मध्य (**नु, सनुहि**) वितीर्ण कर।

भावार्थ– सभी भगवान् से प्रार्थना करें कि सबको सम्मान अधिकार मिलें।

अगली ऋचा में कहा गया है कि हम लोगों को वह धन प्राप्त हो जिससे जगत् में उपकार और आनन्द की भावना फैले।

फिर अगले सूक्त में भी इसी प्रकार का वर्णन है।

आ प्र द्रव परावतोऽर्वावतश्च वृत्रहत्।
मध्वः प्रति प्रभर्मणि।। ऋ 8.82.1.

पदार्थ– (**वृत्रहन्**) कार्य सिद्धि में पड़ने वाले विघ्नों के सहायक। (**प्रभर्मणि**) पुष्टि और सहायता अनुकूलता– अनुग्रह आदि के प्रयोजन से (**परावतः**) दूर से (**च**) और (**अर्वावतः**) समीप से भी (**मध्वः प्रति**) आत्मा की ओर अपने आत्मत्व की ओर (**आ प्र द्रव**) दौड़ कर आ।

भावार्थ– सर्वविध ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए साधक को क्षण भर के लिए भी अपने [illegible] को नहीं भूलना चाहिए।

इषा मन्दस्वाद तेऽ वराय मन्यवे।
भुवत्त इन्द्र शं हृदे ।। ऋ. 8.82.3.

पदार्थ– (**इषा**) सुख वर्षक अन्नादि की वृष्टि के द्वारा (**मन्दस्व**) तृप्त हो, (**आत्**) अनन्तर (**उ**) ही प्रभुरचित पदार्थ (**ते**) तेरे (**वराय**) वरणीय श्रेष्ठ (**मन्यवे**) क्रोध के लिए (**क्षरं**) पर्याप्त अथवा उनको उत्पन्न करने में समर्थ (**भुवत्**) हों। हे (**इन्द्र**) साधक। वे (**ते**) तेरे (**हृदे**) हृदय के लिए (**क्षम्**) कल्याणकारी हों।

भावार्थ– अन्नादि पदार्थों का उपयोग ऐसे करें कि वे कल्याणकारी हों।

इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे सुतस्य गोमतः।
वि पीति तृप्तिमश्नुहि ।। ऋ. 8.82.6.

पदार्थ– हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य साधक (**मे**) मेरी (**हवम्**) पुकार को (**सु श्रुधि**) भली भाँति सुन ले। (**अस्मे**) हममें से विद्वानों द्वारा (**सुतस्य**) साररूप में निचोड़ हुए (**गोमतः**) ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित, ऐश्वर्य पद पदार्थो के सारभूत विज्ञान को (**पीति**) पान क्रिया को (**वि अश्नुहि**) विविध प्रकार से व्याप्त कर। उसको विविधरूप से आत्मसात कर और (**तृप्ति**) तृप्ति प्राप्त कर।

भावार्थ– प्रभु रचित पदार्थ ऐश्वर्य के साधक हैं और उनका ज्ञान विद्वान् प्राप्त करते हैं। साधक इस ज्ञान को विद्वानों से प्राप्त करे। अब इस सूक्त की अन्तिम ऋचा पर विचार करते हैं–

यं ते श्येनः पदाभरत्तिरो रजास्यस्पृतम्।
पिबेदस्य त्वमीक्षिषे ।। ऋ. 8.82.9.

पदार्थ– (**ये**) जिस (**अस्पृत**) अजेय पदार्थ बोध को (**ते**) तुझ साधक के लिए (**श्येनः**) विद्वान् (**पदा**) ज्ञान के प्रकाश की किरण के द्वारा अज्ञानान्धकर को (**तिरः**) पार करके (**अभरत्**) ला देता है (**अस्य**) उसका तू स्वामी है (**पिब इत्**) निश्चय ही उसको उपयोग कर।

भावार्थ– विद्वान् पुरूष साधक को ज्ञान का वह प्रकाश लाकर देता है जो अजेय सिद्ध होता है। अब अगले सूक्त की पहली ऋचा को देखते हैं–

देवानामिदवो महत्तदा वणीमहे वयं।
वृष्णामस्मभ्यमूतये ।। ऋ. 8.83.1.

पदार्थ– (**वयं**) हम (**अस्मभ्यम् ऊतये**) अपने लिए संरक्षण सहायता आदि के लिए सुखादि वर्षाने वाले (**देवानाम्**) मूर्त एवं अमूर्त जड़ एवं चेतन दिव्य गुण पदार्थों का (**इत्**) ही (**महत्**) महत्त्वपूर्ण जो (**अवः**) संरक्षण और सहायता है (**तत्**) उसको (**आ, वृणीमहे**) स्वीकार करें।

भावार्थ– प्रभु की सृष्टि में अनेक जड़ चेतन दिव्य पदार्थ हैं वे सब हमें सुख देते हैं। हम उनकी देन को स्वीकार करें।

अति नो विष्पिता पुरू नौभिरपो न पर्षथ।
यूयमृतस्य रथ्याः ।। ऋ. 8.83.3.

पदार्थ– हे (**ऋतस्य**) यथार्थ ज्ञान, कर्म और विचार आदि के (**रथ्यः**) नेताओ। (**यूयम्**) आप सब (**नौभिः अपः**) जैसे नौकाओं से जल प्रवाहों को पार करते हैं वैसे ही (**नः**) हमें (**पुरू**) बहुत से (**विष्पिता**) इधर से उधर फैले हुए (**अपः**) कर्मों के (**पर्ष थः**) पार उतारते हो।

भावार्थ– सभी प्राणी संसार में आकर विविध कर्म करते हैं। इस कर्म जाल में घिरा मनुष्य विभिन्न पदार्थों की सहायता से ही पार उतर पाता है। जैसे नौका की सहायता से जल प्रवाहों को पार करते हैं वैसे ही दिव्य पदार्थों की सहायता लेनी चाहिए।

वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः।
नेमादित्या अयस्य यत्।। ऋ. 8.83.5.

पदार्थ– हे (**प्रचेतसः**) प्रकृष्ठ ज्ञान से युक्त (**रिशादसः**) हिंसक भावनाओं, प्रवृत्तियों तथा अन्य को नष्ट कर देने वाले (**आदित्या**) अड़तालीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य में स्थिर रह कर सुशिक्षा प्राप्त विद्वानो। आप (**वामस्य**) प्रशस्त ज्ञान धन के (**ईशानासः**) स्वामी है। (**यत्**) जो ऐश्वर्य (**अंधस्य**) पाप का है (**ईम**) उसको (**न**) प्राप्त नहीं करते।

भावार्थ– आदित्य ब्रह्मचारी लोगों को जो प्रबोध देते हैं वह प्रशंसनीय और सेवन करने योग्य ही होते हैं।

यू यं हिष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः।
अधा चिद्व उत ब्रुवे ।। ऋ 8.83.9.

अर्थ– हे (**सुदानव**) शोभनदाता दिव्य गुणियो!

आप सब (**इन्द्र ज्येष्ठाः**) परमेश्वर प्रमुख हैं। (**अभिद्यवः**) दीप्तिमान् और बलवान हैं। (**अधचित्**) यह समझ लेने के बाद मैं उपासक (**वः**) आपकी (**उप, ब्रुवे**) स्तुति करता हूँ (**उत**) और फिर स्तुति करता हूँ। कुसीदि यजुर्वेद अध्याय 33के 47वें मंत्र की ऋषिका है।

अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यनाम्।
इता मरूतो अश्विना।
तं प्रत्नयां। अयं वेनः। ये देवासः ।
आनऽइडाभिः।
विश्वेभिः। सोम्यं मधु। ओमासश्चर्षणीधृतः।।
यजु. 33.37.

पदार्थ– हे (**इन्द्रः**) ऐश्वर्यवान् परमात्मा। हे (**विष्णो**) व्यापक ईश्वर (**मरूतः**) मनुष्यो तथा हे (**आश्विना**) अध्यापक, उपदेशक लोगो! तुम सब (**स जात्यानम्**) दूसरे सहयोगी (**एवाम्**) इन (**नः**) हमारे ज्ञान के बीच (**अभि**) स्वामी पन को (**इत**) प्राप्त हो जाओ।

भावार्थ– इस मंत्र में अध्यापक, उपदेशक और सभी सहयोगी जनों से प्रार्थना की गई है कि आप सब हमारे ज्ञान में प्राप्त हों। इसके बाद हम कुदीसि के सामवेद में किए गए कार्यों को देखते हैं। सामवेद में उन्होंने मंत्र संख्या 138, 167, 728 और 730 पर काम किया है। मंत्र संख्या 138 तो वही है जिसकी व्याख्या हमने अभी ऋ. 8.83.1. में की है फिर मंत्र संख्या 167 भी ऋग्वेद 8.81.1 है जिसकी व्याख्या की जा चुकी है। मंत्र संख्या 728, 729 व 730 भी ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त संख्या 83 मंत्र संख्या 1 सूक्त 81.1 व सूक्त 8.81.2 में आ गए हैं। इति।

73 शास्त्री नगर, दादाबाडी
कोटा, राजस्थान

साकारवाद और मूर्त्तिपूजा से समाज को मुक्ति दिलाना आसान नहीं

● भावेश मेरजा

आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के पिताजी शिव भक्त पौराणिक ब्राह्मण थे। स्वामी जी (जिनका मूल नाम 'मूलशंकर' था) भी अपने घर पर शिवलिंग आदि मूर्त्तियों को पिताजी के आदेश अनुसार पूजते थे। परन्तु एक बार शिवरात्रि के प्रसंग में चूहों को मूर्त्ति पर चढ़े हुए देख कर मूलशंकर को यह अपूर्व बोध हुआ कि मूर्त्ति ईश्वर नहीं हो सकती और मूर्त्तिओं की पूजा निरर्थक कार्य है। अपने जीवन में घटित इस प्रसंग से उन्होंने वास्तविक 'शिव' अर्थात् सच्चे ईश्वर का साक्षात्कार करने का दृढ़ संकल्प कर लिया। आगे चलकर वैराग्यवान् होकर गृह त्याग किया। संन्यास लेकर 'दयानन्द सरस्वती' नाम धारण किया। कई वर्षों तक देशभर में भ्रमण करते हुए सच्चे गुरु की शोध की। अनेक साधु संन्यासियों तथा विद्वानों से सत्संग वार्तालाप किया। अन्त में मथुरा निवासी स्वामी विरजानन्द जी को अपना गुरु बनाया और उनकी पाठशाला में उनसे अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया। वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार तथा अवैदिक मत–मतान्तरों को नष्ट करने का महा व्रत लिया। सद्धर्म प्रचार के कार्यक्षेत्र में प्रवेश किया। वेदों तथा वेद शास्त्रों पर गम्भीर विचार मन्थन किया। ईश्वर निराकार ही है, साकार, शरीरधारी, अवतार लेने वाला नहीं है, इस मन्तव्य को वेदादि शास्त्र प्रमाणों एवं विभिन्न युक्तियों तथा तर्कों के आधार पर सुस्थिर किया। अपने इस मन्तव्य को लोक मानस में दृढ़ता से बिठाने के लिए उन्होंने प्रचलित साकारवाद का खण्डन किया और वेदोक्त निराकारवाद को अनेकशः व्याख्यायित प्रचारित किया। स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों तथा प्रवचनों में ईश्वर को निराकार सिद्ध करने में अत्यन्त पुरुषार्थ किया जो वैदिक ईश्वरवाद के प्रवर्त्तन के लिए अनिवार्य था। क्योंकि मूर्त्तिपूजा का आधार साकारवाद का विचार है जिसे ध्वस्त या निर्मूल किए बिना मूर्त्तिपूजा को भी दूर नहीं किया जा सकता। इसलिए वैदिक ईश्वरवाद की पुनःप्रतिष्ठा करने में स्वामी जी को साकारवाद तथा मूर्त्तिपूजा–इन दोनों का तीव्र खण्डन करना पड़ा। उन्होंने अपने जीवन काल में इन दोनों अवैदिक विचारों के निरसन के लिए पर्याप्य शक्ति प्रयुक्त की। इसका परिणाम यह आया कि जितने भी मत–पन्थ–सम्प्रदाय साकारवादी थे, वे सब स्वामी जी के विरोध में उठ खड़े हुए। हाँ, कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने मध्यम मार्ग अपनाते हुए यह कहना आरम्भ किया कि ईश्वर है तो निराकार परन्तु आवश्यकता पड़ने पर वह शरीर धारण कर साकार भी होता है, हो सकता है। विशुद्ध निराकारवाद की बात को मानने वाला वर्ग तो उस समय भी अल्पसंख्यक था और आज भी अल्पसंख्यक है। आज भी प्रायः हिन्दू एवं अन्य मतावलम्बी आस्तिक व्यक्ति साकारवादी और मूर्त्तिपूजा के समर्थक, पोषक हैं। साकारवाद और मूर्त्तिपूजा से मुक्ति पाना आसान नहीं है। ये अवैदिक मान्यताएँ जन मानस में बहुत बढ़ चुकी हैं। आर्य समाज के अनेक विद्वान् प्रचारकों तथा लेखकों ने साकारवाद और मूर्त्तिपूजा का खण्डन करने का स्तुत्य प्रयास किया है, परन्तु ये अविद्याजन्य महा रोग हैं। आसानी से दूर होने वाले नहीं। इसलिए आर्य समाज को इस दिशा में निरन्तर कार्य करते रहने की आवश्यकता है।

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात–392015, मो. 9879528247

☞ पृष्ठ 02 का शेष

भगवान शंकर और दयानन्द

और ऊपर का महानाश उसे दृष्टिगोचर नहीं होते।"

यह है आज से पाँच सहस्र वर्ष पूर्व का दृश्य, जिसे देखकर प्रश्न जाग उठा–मनुष्य क्या करे?

आज से दो हज़ार पाँच सौ वर्ष पूर्व एक अर्थी को कुछ लोग उठाए लिए जाते थे। एक नवयुवक ने इनको देखा। आश्चर्य से पूछा, "क्या है यह? कैसी वस्तु है जो आठ पाँव से चलती है?" उसके सारथि ने कहा, "अर्थी है यह। एक व्यक्ति मर गया, उसको जलाने के लिए ये लोग लिए जाते हैं।" नवयुवक का नाम था राजकुमार सिद्धार्थ। बाद में संसार ने इन्हें शाक्य मुनि गौतम और बुद्ध भी कहा। आश्चर्य से वह बोला, "क्या प्रत्येक व्यक्ति को मरना पड़ता है?" सारथि बोला, "हाँ राजकुमार! प्रत्येक व्यक्ति को अन्त में मरना है, मरने के पश्चात् मनुष्य को जलाया जाना भी है।" राजकुमार ने भयभीत होकर कहा, "क्या मुझे भी मरना होगा? क्या मुझे भी जलाया जाएगा?" सारथि बोला, "अन्त तो ऐसा ही होगा, अन्त में तो सबको मरना है।" आगे जाकर राजकुमार ने एक पशु को देखा, एक दीन भिखारी को, एक बूढ़ी स्त्री को देखा जो लाठी टेककर चलती थी। एक निर्धन व्यक्ति को देखा जो सर्दी से ठिठुरा जाता था। उसका हृदय चिल्ला उठा, "यह सब–कुछ यदि है तो मनुष्य क्या करे?" इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए वह एक वृक्ष के नीचे जा बैठा; तब तक नहीं उठा जब तक उसे अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिल गया।

और आज से दो सहस्त्र एक सौ वर्ष पूर्व एक और बालक ने भी वे दृश्य देखे। उसकी आयु केवल आठ वर्ष थी। उसका हृदय भी चिल्ला उठा, "मनुष्य क्या करे?" केरल प्रान्त के अलवाई रेलवे स्टेशन से परे कालपी नाम का एक ग्राम है। उस ग्राम में अलवाई नदी के किनारे उसका घर था। मालाबार में जब दंगा हुआ और पूज्य महात्मा हंसराज की आज्ञा से मैं वहाँ पीड़ित लोगों की सहायता के लिए गया तो उस गाँव को देखा। उस अलवाई नदी को भी देखा जिसके किनारे आठ वर्ष के उस बालक ने एक चिता को जलते देखा था, एक बूढ़े को लड़खड़ाते हुए देखा था, एक रोगी को कराहते हुए देखा था। सबको देखकर उसका हृदय चिल्ला उठा, "यह क्या है? क्यों है? मनुष्य क्या करे?" उस बालक का नाम था शंकर। बाद में संसार ने उसे जगद्गुरु शंकराचार्य कहा।

लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व पश्चिम भारत के डेमी नदी के किनारे टंकारा नामक ग्राम में एक और बालक उत्पन्न हुआ। उसका नाम भी शंकर था। शिवरात्रि के दिन प्रातः से सायंकाल तक व्रत रखकर वह बैठा रहा। सोचता रहा, आज रात को भगवान् शिव के दर्शन होंगे। रात्रि आई। सब लोग सो गए। रात्रि के तीसरे पहर उसने देखा कि एक चूहा शिव के ऊपर चढ़े मिष्ठान्न को आनन्दपूर्वक भोग रहा है, तो उसके मन के भीतर कोई चिल्ला उठा, 'ये तो भगवान् शिव शंकर नहीं हैं। ये तो कैलाशपति नहीं हैं।' तब कुछ दिन के पश्चात् उसकी बहन मर गई। लोग रोए। मूलशंकर चुप खड़ा रहा; पूछा, "इसको क्या हो गया है?" लोगों ने बताया, "मर गई है यह, मौत ले गई है इसको।" मूलशंकर ने आश्चर्य से पूछा, "क्या सबको मरना पड़ता है?" उत्तर मिला, "सबको।" तभी कुछ दिनों के पश्चात् उसके चाचा की मृत्यु हो गई; मौत उसके एक और प्यारे को ले गई। मूलशंकर के आँसुओं का बाँध टूट गया। चुप कराते, वह चुप न होता; बार–बार सोचता, 'मैं ऐसे संसार में नहीं रहूँगा जहाँ शिव नहीं है, जहाँ जीवन का अन्त मृत्यु है।' वैराग्य का वेग जाग उठा हृदय के अन्दर। सम्बन्धियों ने सोचा, 'इसका विवाह करा दें, बहू आएगी तो वैराग्य को भूल जाएगा।' विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। मूलशंकर के हृदय में भूकम्प आने लगा। तब एक रात उसने स्वप्न देखा कि एक महान् ज्योति उसके पास आकर कह रही है, "सच्चे शिव की तलाश करनी है और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी है तो घर से निकल, उन लोगों के पास पहुँच जिन्होंने मृत्यु पर विजय पाई।" उससे अगली प्रातः यह बालक घर में नहीं था। घोर तप, न थकनेवाली खोज के मार्ग पर चल पड़ा था, जिसने उसे महर्षि दयानन्द बना दिया।

एक सहस्र दो सौ वर्ष पूर्व के शंकर ने अपनी माँ से कहा, "मैं साधु बन जाऊँगा, संन्यास लूँगा।" ममताभरी माँ ने चिल्लाकर कहा, "यह कैसे हो सकता है? अभी तू बच्चा है। अभी बड़ा होगा। तेरा विवाह करूँगी, बाजे बजेंगे।" शंकर ने कहा, "नहीं माँ! चल नदी पर नहाने चलें। मैं नहाऊँगा, तू देखना।" नदी के किनारे पहुँचकर माँ ने कहा, "बहुत आगे नहीं जाना, पानी अधिक है।" शंकर कपड़े उतारकर नहाते हुए आगे बढ़े, तभी शोर मचा दिया, "माँ! मुझे मगरमच्छ ने पकड़ लिया है, वह मुझे खींचे लिए जा रहा है। तेरा पुत्र अब समाप्त हुआ।" वीरान किनारे पर माँ चिल्ला उठी, "हाय–हाय, मैं क्या करूँ?" शंकर पानी में खड़े–खड़े बोले, "माँ! मगरमच्छ एक बात कहता है, बोलता है कि यदि तू संन्यासी हो जाए तो मैं तुझे छोड़ दूँगा।" माँ ने घबराकर कहा, "ऐसी बात न कह! इसे कह, तुझे छोड़ दे।" शंकर बोले, "वह मुझे घसीटे लिए जाता है। तू यदि आज्ञा दे तो मैं इसे संन्यासी होने का वचन दे दूँ।" माँ ने रोते हुए कहा, "मैं वचन देती हूँ।" शंकर बोले, "वह अभी संन्यासी होने की बात कहता है।" माँ ने कहा, "अभी हो जाना, इसे कह, तुझे छोड़ तो दे।" और इस प्रकार आज्ञा लेकर शंकर संन्यासी हुए आठ वर्ष की आयु में नर्मदा के तट पर स्वामी गोविन्दानन्द से उन्होंने दीक्षा ली। स्वामी दयानन्द भी घर से निकलकर वहीं पहुँचे।

क्रमशः

वेद में अध्यात्म विज्ञान एवं भौतिकी विज्ञान

● कामता प्रसाद मिश्र

प्रायः देखा जाता है कि विश्व के चाहे प्राच्य हों या पाश्चात्य अनेक लोग अध्यात्म विज्ञान एवं भौतिकी विज्ञान को परस्पर विरोधी जानते, मानते और समझते हैं। अध्यात्मवादियों का मानना है कि अध्यात्म ही सर्वोपरि है जबकि भौतिकवादी विज्ञान की प्रगति और धन, वैभव, शान–शौकत को श्रेष्ठ बतलाता है। परंतु अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान न एक दूसरे के विरोधी हैं, न ही एक दूसरे की उपेक्षा करते हैं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं, इनमें घनिष्ठ सम्बन्ध है। अध्यात्म विज्ञान चेतन आत्मा और परमात्मा के विषय का ज्ञान कराता है और भौतिक विज्ञान जड़ भौतिक पदार्थ अर्थात् पृथ्वी, सूर्य, अंतरिक्ष में समाहित सम्पूर्ण तत्त्वों का अध्ययन करता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है; क्योंकि अध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों का समान रूप से मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जहाँ अध्यात्म को आन्तरिक जीवन का नाम देते हैं वहीं भौतिक को बाह्य अर्थात् विषयग्रसित जीवन के नाम से जानते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रकृति बाह्य जीवन की सत्ता है और ईश्वर आंतरिक जीवन का मूल है। परमात्मा, आत्मा तथा प्रकृति के अन्तर्गत विश्व के सम्पूर्ण पदार्थ आ जाते हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण जगत् में दो प्रकार का जीवन है अर्थात बाह्य और आंतरिक जिसे जड़ तथा चेतन नाम से जानते हैं।

युग प्रवर्तक महान दार्शनिक एवं उच्च कोटि के चिंतक महर्षि दयानन्द जी ने उद्घोष किया–''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'' वेद सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान के भण्डार हैं। वेद में अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान दोनों का समावेश है। महर्षि दयानन्द जी ऐसे प्रथम वेद भाष्यकार हैं जिन्होंने अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान अर्थात् चेतन तथा जड़ पदार्थों का तात्विक एवं मार्मिक दृष्टि से व्याख्या किया है। उन्होंने अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान दोनों विद्याओं की व्याख्या वैज्ञानिक एंव तर्कपूर्ण वेद भाष्य में किया। आप के पूर्व के सभी वेद भाष्यकार केवल कर्मकाण्ड और अध्यात्म तक ही सीमित रहे। महर्षि ने आत्मा, परमात्मा के स्वरूप तथा गुणों की अनेक वेद मंत्रों में व्याख्या की, वहीं पर भौतिक पदार्थों, ग्रहों, सूर्य, पृथ्वी, अग्नि, जल के साथ आकाश, काल तथा समय आदि की भी व्याख्या प्रस्तुत की। वेदों में भौतिक विज्ञान का उद्घोष ऋषि दयानन्द सरस्वती की आधुनिक युग की अद्वितीय क्रान्तिकारी देन है, जिसे युगों–युगों तक स्मरण किया जाएगा।

महर्षि दयानन्द ने अध्यात्म विज्ञान को श्रेष्ठतम विज्ञान बताया है, जो आत्मा–परमात्मा का समग्र ज्ञान का प्रकाश पुंज है। इसकी साधना से व्यक्ति परमानन्द आत्मिक शांति और मोक्ष प्राप्त करता है। मानव जीवन के लिए भौतिक विज्ञान भी आवश्यक विज्ञान है मानव जिससे विकास की ऊँचाइयों तथा संसाधनों को प्राप्त कर सुख–समृद्धि प्राप्त करता है। महर्षि ने ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' में लिखा है– ''एक तो परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना और दूसरा यह है कि उसके रचे हुए सब पदार्थों के गुणों का यथावत् विचार करके उनसे कार्य सिद्ध करना अर्थात् ईश्वर ने कौन–कौन पदार्थ किस–किस प्रयोजन के लिए रचे हैं और इन दोनों में से ईश्वर का जो प्रतिपादन है सो ही प्रधान है।''

इसी पुस्तक में स्वामी जी आगे लिखते हैं–

''वेदों में दो विद्या है–एक अपरा दूसरी परा। इनमें से अपरा यह है कि जिससे पृथ्वी और तृण से लेके प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक–ठाक कार्य सिद्ध करना होता है और दूसरी परा कि जिससे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। यह परा विद्या अपरा विद्या से अत्यंत उत्तम है क्योंकि अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या है। ।। वेदविषयविचार।।

महर्षि दयानन्द जी ने उक्त श्रेष्ठ एवं उन्नत विचार को प्रकाशित कर यह सिद्ध कर दिया कि वेद केवल कर्मकाण्ड की पुस्तक नहीं है। उन भ्रांतियों का भी निवारण कर दिया है कि वेद मात्र एक धर्म ग्रंथ नहीं है। पाश्चात्य एवं प्राच्य वेद के भाष्यकारों तथा दार्शनिकों को बता दिया कि वेद न केवल प्रार्थना, उपासना तथा स्तुति आदि को ही शिक्षा व ज्ञान देता है बल्कि दर्शनशास्त्र तथा भौतिक विज्ञान के सम्पूर्ण तत्त्वों, पदार्थों लोक लोकान्तरों का ज्ञान देने वाला भण्डार भी है। आधुनिक विज्ञान के धुरन्धरों एवं वैज्ञानिकों को भी संदेश दिया कि वेद जहाँ आत्मा–परमात्मा के विषय का ज्ञान देता है वहीं प्रकृति, विद्युत विज्ञान, सौर ऊर्जा आयुध, विज्ञान औषधि विज्ञान, शरीर विज्ञान आदि के ज्ञान का भण्डार है। स्वामी जी ने वेद भाष्य में उक्त सिद्धान्तों की खोज कर घोषित किया कि विद्वान आगे भविष्य में आविष्कार और अनुसंधान कर उन्नति करें। उनके भाष्य भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत और संदेश है जिसका उपयोग कर मनुष्य विज्ञान आदि के क्षेत्र में विकास पथ पर अग्रसर हों।

महर्षि दयानन्द जी अखिल विश्व के मानव का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। जहाँ वे अध्यात्म को उच्च स्थान देते थे, वहीं शिक्षा, स्वास्थ्य, उच्च तकनीक, उद्योग, कुटीर उद्योग तथा विदेशी व्यापार आदि के पक्षधर थे। क्योंकि परतंत्रता के भीषण भुंझावात एवं दमनकारी नीतियों ने भारत देश के लघु उद्योग, कुटीर उद्योग आदि को ध्वस्त कर दिया गया था। वहीं भारतीय शिक्षा तथा ज्ञान विज्ञान को भी नष्ट कर मैकाले की शिक्षा नीति लागू की गई थी। देश में चारों तरफ अंधविश्वास अशिक्षा, गरीबी भुखमरी का साम्राज्य फैला था। ऐसी पीड़ा स्वामी जी को असहनीय थी, वे देश की गरीबी अज्ञान, बेरोज़गारी, अशिक्षा को दूरकर देश को समृद्ध तथा सुखी बनाना चाहते थे इसीलिए अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान के वेद के सन्देश को जन–जन तक पहुँचाकर एक सुदृढ़ सम्पन्न स्वतंत्र भारत देखना चाहते थे। नमूने हेतु कुछ मंत्र प्रस्तुत हैं।

वेद की अध्यात्म विज्ञान सम्बन्धी कुछ ऋचाएँ हैं:–

आत्मा– **न विजानामि यदि वेदमस्मि निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि।** ऋग्वेद–मण्डल १सू. 164, मंत्र ३७।।

अर्थ – आत्मा को जब शरीर प्राप्त होता है तब ही ज्ञान और कर्म का उपयोग करता है। तभी वह प्रयत्न, मनन, दर्शन शक्ति द्वारा गति करता है।

'अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना संयोनिः।

।। ऋ.१।१६४।३८।।

अर्थ–जगत में दो पदार्थ हैं जड़ तथा चेतन। जड़ ज्ञान शून्य तथा चेतन में स्वयं तथा दूसरे को जानने का सामर्थ्य है। दोनों अनादि सत्ताएँ हैं। किंतु आत्मा अमरण धर्मा तथा शरीर मरण धर्मा है।

परमात्मा–**'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातिरिश्वानमाहुः।'** ।। ऋ.१।१६४।४६।।

अर्थ–सत्यस्वरूप परमात्मा एक है उसे विद्वान, मनीषी अनेक नाम से जानते, पुकारते हैं। उसको सर्वव्यापक, सर्व नियन्ता, वायुसमान गतिमान कहते हैं।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमा। तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म तां आपः स प्रजापतिः।। ।। यजु. ३१।१।।

अर्थ – वह परमात्मा ज्ञान स्वरूप प्रलय में सबको ग्रहण करने वाला अनन्त, सर्वज्ञ, वलवान, आनन्दस्वरूप, शुद्ध भाव से शुक्र, महान, व्यापक और प्रजा का स्वामी है।

अकायमव्रणमस्ना विरम शुद्धम् अपाप विद्धम्। यजु. ४०।८

अर्थ – वह परमात्मा शरीर रहित, छिद्र रहित, नशनाड़ी के बंधन से रहित, शुद्ध, पवित्र तथा पाप रहित है।

'स नः पिता जनिता स उत बंधुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा।' अर्थव. २।१।३,

अर्थ–वह परमात्मा हमारा पालक, जन्मदाता तथा बंधु है। वही सम्पूर्ण भुवनों और स्थानों को जानता है।

उपर्युक्त मंत्रों में आत्मा को अमरण धर्मा तथा शरीर को मरण धर्मा कहा गया है और परमात्मा को सर्वव्यापक, आनन्दस्वरूप आदि बताया गया है। आत्मा, परमात्मा तथा प्रकृति अनादि हैं।

वेद में भौतिक विज्ञान सम्बन्धी कुछ ऋचाएँ प्रस्तुत हैं:–

अयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च पयन्त्स्वः। यजु.३।६

अर्थ–यह पृथ्वी जननी–स्वरूप जल को प्राप्त होती हुई तथा सूर्य के चारों और चलती हुई अन्तरिक्ष में भ्रमण करती है।

यदा सूर्यममुं दिवि शुक्रं ज्योतिधारयः। अदिते विश्वाभुवनानि येमिरे।

ऋ. ६।अ.१।व६।मं. ५।।

अर्थ–हे परमेश्वर! जब उन सूर्यादि लोकों को आप ने रचा, जो आप के ही प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं। आप ने अपने सामर्थ्य से धारण किया है। आप की अनन्त शक्ति के कारण सूर्य और पृथ्वी आदि लोकों का सब लोकों के साथ आकर्षण बना हुआ है।

त्योरिद घृत व त्पयो विप्रारिहन्ति धीतिभीः। गंधर्वस्य ध्रुवे पदे। ऋ.१।२२।१४

हे विद्वान वैज्ञानिकों! तुम सभी पृथ्वी आदि के पदार्थों से विमान एवं जलयान बनाकर उनके कलपूर्जों में जल और अग्नि के प्रयोग या अन्य पृथ्वी की उर्जा से भूमि, समुद्र तथा आकाश में भ्रमण कर सुख प्राप्त करो।

नवानां नवतीनां विषस्य रोपुणीणाम्। सर्वासामग्रभं नामारे अस्य योजनं। हरिष्ठा मधुत्वा मधु लाचकार।। ऋ १.१८१।१३।।

अर्थ–हे मनुष्यो। जो यहाँ हमारे लिए

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

कुसीदि ऋषिका

● शिवनारायण उपाध्याय

कुसीदि ने ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में कार्य किया है। हम तीनों वेदों में उनके द्वारा किए गए कार्यों का संक्षेप में अध्ययन क्रमानुसार करने जा रहे हैं। कुसीदि का संबंध काण्व वंश से है। ऋग्वेद का लगभग आठवाँ सम्पूर्ण मण्डल कण्व परिवार को ही समर्पित है। ऐसे में कुसीदि ऋग्वेद मण्डल 8 के सुक्त 81, 82 व 83 की ऋषिका हैं।

सूक्त 81 में कुल 9 ऋचाएँ है। इस सूक्त में ईश्वर स्तुति और ईश्वर की प्रार्थना के अतिरिक्त सृष्टि के विभिन्न पदार्थों का उचित उपयोग का वर्णन है। कुछ आलंकारिक वर्णन भी हैं।

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभम् सङ्गृभाय।
महा हस्ती दक्षिणेन ।। ऋ.8.81.1.

पदार्थ– (**इन्द्र**) हे परमैश्वर्य शाली परमात्मन्। जिस कारण तू (**महा हस्ती**) महा शक्तिशाली है, इसलिए (**दक्षिणेन**) महा बलवान् हाथ से (**नः**) हमारे लिए (**क्षुमन्तम्**) प्रशस्त (**चित्रम्**) चित्र–विचित्र नाना प्रकार युक्त (**ग्राभम्**) ग्रहणीय वस्तुओं को (**सङ्गृभाय**) संग्रह कीजिए।

भावार्थ–इस ऋचा में परमात्मा से ज्ञानादि धन की याचना की गई है।

अगली ऋचा में इसी विषय का विस्तार हुआ है।

विद्माहित्वा तुविकूर्मि तुविदेष्णं तुवीमधम्।
तुविमात्रमवोभि ।। ऋ. 8.81.2.

पदार्थ– हे इन्द्र। (**अवोभि**) आपकी रक्षा द्वारा हम मनुष्य (**विद्महि**) इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि (**त्वा**) तुम (**तुविकर्मिम्**) सर्व कर्मा महाशक्ति (**तुविदेष्णम्**) सर्वदाता, महादानी (**तुविमधम्**) सर्वधन (**तुविमात्रम्**) सर्वव्यापी है। ऐसा तुझे हम जानते हैं अतः हम पर कृपा कर।

परमात्मा सर्वशक्तिमान् है और अपने कार्य में परम स्वतंत्र है।

नहि त्वा शूर देवान न मर्तासो दित्सन्तम्।
भीमं न गां वारयन्ते ।। ऋ. 8.81.3.

पदार्थ– (**शूर**) हे महावीर प्रभो। (**दित्सन्तम**) इस जगत् को दान देते हुए (**त्वा**) तुझको (**देवाः नहि वारयन्ते**) देव गण निवारण नहीं कर सकते। (**न**) नहीं (**मर्त्तासः**) मनुष्यगण ही तुझे निवारण कर सकते। (**न**) जैसे (**भीमम्**) भयानक (**गाम्**) साँड को रोक नहीं सकते।

आ नो भर दक्षिणे नाभि सव्ये प्र मृश।
इन्द्र मा नो वसोर्निभोक ।। ऋ. 8.81.6.

पदार्थ– हे बलवान् (**दक्षिणेन**) दक्षिण हस्त से (**नः**) हम लोगों को (**आभर**) धन धान्य से पूर्ण कर (**सव्येन**) बाएँ हाथ से (**अधि प्रमृश**) चारों ओर से रक्षा कर। हे इन्द्र। (**नः**) हम लोगों को (**वसो**) धन और वास (**मा, नि, भाक्**) अलग मत कर।

भावार्थ– हे प्रभो! हम लोगों को दाहिने हाथ से धन धान्य से पूर्ण कर दे और बाएँ से चारों ओर से हमारी रक्षा कर। हम लोगों को कभी भी धन और निवास स्थान से रहित मत कर।

सब मनुष्यों को समान अधिकर मिलना चाहिए।

वेद कहता है–

इन्द्र य उ नुते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः।
अस्माभिः सु तं सनुहि।। ऋ. 8.81.8.

पदार्थ– हे इन्द्र! (**यः उ**) जो (**वाजः**) विज्ञान और धन (**विप्रेभिः**) बुद्धिमान् जनों से (**सनित्वः**) तेरे निकट हैं। (**त**) उस धन को (**अस्माभिः**) हम लोगों के मध्य (**नु, सनुहि**) वितीर्ण कर।

भावार्थ– सभी भगवान् से प्रार्थना करें कि सबको सम्मान अधिकार मिलें।

अगली ऋचा में कहा गया है कि हम लोगों को वह धन प्राप्त हो जिससे जगत् में उपकार और आनन्द की भावना फैले।

फिर अगले सूक्त में भी इसी प्रकार का वर्णन है।

आ प्र द्रव परावतोऽर्वावतश्च वृत्रहत्।
मध्वः प्रति प्रभर्मणि।। ऋ 8.82.1.

पदार्थ– (**वृत्रहन्**) कार्य सिद्धि में पड़ने वाले विघ्नों के सहायक। (**प्रभर्मणि**) पुष्टि और सहायता अनुकूलता– अनुग्रह आदि के प्रयोजन से (**परावतः**) दूर से (**च**) और (**अर्वावतः**) समीप से भी (**मध्वः प्रति**) आत्मा की ओर अपने आत्मत्व की ओर (**आ प्र द्रव**) दौड़ कर आ।

भावार्थ– सर्वविध ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए साधक को क्षण भर के लिए भी अपने आत्मतत्त्व को नहीं भूलना चाहिए।

इषा मन्दस्वाद तेऽरं वराय मन्यवे।
भुवत्त इन्द्र शं हृदे ।। ऋ. 8.82.3.

पदार्थ– (**इषा**) सुख वर्षक अन्नादि की वृष्टि के द्वारा (**मन्दस्व**) तृप्त हो, (**आत्**) अनन्तर (**उ**) ही प्रभुरचित पदार्थ (**ते**) तेरे (**वराय**) वरणीय श्रेष्ठ (**मन्यवे**) क्रोध के लिए (**क्षरं**) पर्याप्त अथवा उनको उत्पन्न करने में समर्थ (**भुवत्**) हों। हे (**इन्द्र**) साधक। वे (**ते**) तेरे (**हृदे**) हृदय के लिए (**क्षम्**) कल्याणकारी हों।

भावार्थ– अन्नादि पदार्थों का उपयोग ऐसे करें कि वे कल्याणकारी हों।

इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे सुतस्य गोमतः।
वि पीति तृप्तिमश्नुहि ।। ऋ. 8.82.6.

पदार्थ– हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य साधक (**मे**) मेरी (**हवम्**) पुकार को (**सु श्रुधि**) भली भाँति सुन ले। (**अस्मे**) हममें से विद्वानों द्वारा (**सुतस्य**) साररूप में निचोड़ हुए (**गोमतः**) ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित, ऐश्वर्य पद पदार्थो के सारभूत विज्ञान को (**पीति**) पान क्रिया को (**वि अश्नुहि**) विविध प्रकार से व्याप्त कर। उसको विविधरूप से आत्मसात कर और (**तृप्ति**) तृप्ति प्राप्त कर।

भावार्थ– प्रभु रचित पदार्थ ऐश्वर्य के साधक हैं और उनका ज्ञान विद्वान् प्राप्त करते हैं। साधक इस ज्ञान को विद्वानों से प्राप्त करे। अब इस सूक्त की अन्तिम ऋचा पर विचार करते हैं–

यं ते श्येनः पदाभरत्तिरो रजास्यस्पृतम्।
पिबेदस्य त्वमीक्षिषे ।। ऋ. 8.82.9.

पदार्थ– (**ये**) जिस (**अस्पृत**) अजेय पदार्थ बोध को (**ते**) तुझ साधक के लिए (**श्येनः**) विद्वान् (**पदा**) ज्ञान के प्रकाश की किरण के द्वारा अज्ञानान्धकर को (**तिरः**) पार करके (**अभरत्**) ला देता है (**अस्य**) उसका तू स्वामी है (**पिब इत्**) निश्चय ही उसको उपयोग कर।

भावार्थ– विद्वान् पुरुष साधक को ज्ञान का वह प्रकाश लाकर देता है जो अजेय सिद्ध होता है। अब अगले सूक्त की पहली ऋचा को देखते हैं–

देवानामिदवो महत्तदा वणीमहे वयं।
वृष्णामस्मभ्यमूतये ।। ऋ. 8.83.1.

पदार्थ– (**वयं**) हम (**अस्मभ्यम् ऊतये**) अपने लिए संरक्षण सहायता आदि के लिए सुखादि वर्षाने वाले (**देवानाम्**) मूर्त एवं अमूर्त जड़ एवं चेतन दिव्य गुण पदार्थों का (**इत्**) ही (**महत्**) महत्त्वपूर्ण जो (**अवः**) संरक्षण और सहायता है (**तत्**) उसको (**आ, वृणीमहे**) स्वीकार करें।

भावार्थ– प्रभु की सृष्टि में अनेक जड़ चेतन दिव्य पदार्थ हैं वे सब हमें सुख देते हैं। हम उनकी देन को स्वीकार करें।

अति नो विष्पिता पुरू नौभिरपो न पर्षथ।
यूयमृतस्य रथ्याः ।। ऋ. 8.83.3.

पदार्थ– हे (**ऋतस्य**) यथार्थ ज्ञान, कर्म और विचार आदि के (**रथ्यः**) नेताओ। (**यूयम्**) आप सब (**नौभिः अपः**) जैसे नौकाओं से जल प्रवाहों को पार करते हैं वैसे ही (**नः**) हमें (**पुरु**) बहुत से (**विष्पिता**) इधर से उधर फैले हुए (**अपः**) कर्मों के (**पर्ष थः**) पार उतारते हो।

भावार्थ– सभी प्राणी संसार में आकर विविध कर्म करते हैं। इस कर्म जाल में घिरा मनुष्य विभिन्न पदार्थों की सहायता से ही पार उतर पाता है। जैसे नौका की सहायता से जल प्रवाहों को पार करते हैं वैसे ही दिव्य पदार्थों की सहायता लेनी चाहिए।

वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः।
नेमादित्या अयस्य यत्।। ऋ. 8.83.5.

पदार्थ– हे (**प्रचेतसः**) प्रकृष्ट ज्ञान से युक्त (**रिशादसः**) हिंसक भावनाओं, प्रवृत्तियों तथा अन्य को नष्ट कर देने वाले (**आदित्या**) अड़तालीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य में स्थिर रह कर सुशिक्षा प्राप्त विद्वानो। आप (**वामस्य**) प्रशस्त ज्ञान धन के (**ईशानासः**) स्वामी है। (**यत्**) जो ऐश्वर्य (**अंधस्य**) पाप का है (**ईम**) उसको (**न**) प्राप्त नहीं करते।

भावार्थ– आदित्य ब्रह्मचारी लोगों को जो प्रबोध देते हैं वह प्रशंसनीय और सेवन करने योग्य ही होते हैं।

यू यं हिष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः।
अधा चिद्व उत ब्रुवे ।। ऋ 8.83.9.

अर्थ– हे (**सुदानव**) शोभनदाता दिव्य गुणियो!

आप सब (**इन्द ज्येष्ठाः**) परमेश्वर प्रमुख हैं। (**अभिद्यवः**) दीप्तिमान् और बलवान हैं। (**अधचित्**) यह समझ लेने के बाद मैं उपासक (**वः**) आपकी (**उप, ब्रुवे**) स्तुति करता हूँ (**उत**) और फिर स्तुति करता हूँ। कुसीदि यजुर्वेद अध्याय 33के 47वें मंत्र की ऋषिका है।

अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यनाम्।
इता मरुतो अश्विना।
तं प्रत्नयां। अयं वेनः। ये देवासः।
आनऽइडाभिः।
विश्वेभिः। सोम्यं मधु। ओमासश्चर्षणीधृतः।।
यजु. 33.37.

पदार्थ– हे (**इन्द्रः**) ऐश्वर्यवान् परमात्मा। हे (**विष्णो**) व्यापक ईश्वर (**मरूतः**) मनुष्यो तथा हे (**आश्विना**) अध्यापक, उपदेशक लोगो! तुम सब (**स जात्यानम्**) दूसरे सहयोगी (**एवाम्**) इन (**नः**) हमारे ज्ञान के बीच (**अभि**) स्वामी पन को (**इत**) प्राप्त हो जाओ।

भावार्थ– इस मंत्र में अध्यापक, उपदेशक और सभी सहयोगी जनों से प्रार्थना की गई है कि आप सब हमारे ज्ञान में प्राप्त हों। इसके बाद हम कुदीसि के सामवेद में किए गए कार्यों को देखते हैं। सामवेद में उन्होंने मंत्र संख्या 138, 167, 728 और 730 पर काम किया है। मंत्र संख्या 138 तो वही है जिसकी व्याख्या हमने अभी ऋ. 8.83.1. में की है फिर मंत्र संख्या 167 भी ऋग्वेद 8.81.1 है जिसकी व्याख्या की जा चुकी है। मंत्र संख्या 728, 729 व 730 भी ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त संख्या 83 मंत्र संख्या 1 सूक्त 81.1 व सूक्त 8.81.2 में आ गए हैं। इति।

73 शास्त्री नगर, दादाबाडी
कोटा, राजस्थान

महर्षि दयानन्द और गोरक्षा

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धाताचार्य

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारत भूमि) ऋषियों–मुनियों, त्यागी–तपस्वी, विद्वानों का प्यारा देश है। इस देश में संसार के सब देशों से ज्यादा महान् पुरुष पैदा हुए हैं जो ईश्वर भक्त, सदाचारी, परोपकारी थे। उन्हीं महान पुरुषों में से एक थे जगतगुरु महर्षि दयानन्द महाराज।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार के बाद गौरक्षा के प्रश्न को ही सबसे अधिक महत्त्व देते थे। उनके विचार से मानव मात्र का कल्याण वैदिक पथ पर चलने से तो होगा ही, इसके साथ ही उसका हित व उपकार गोपालन से ही सम्भव है। इस बात को वे भली–भाँति जानते थे कि कृषि जितनी मानवमात्र के लिए जरूरी है उतनी ही जरूरी गोपालन है। इसका कारण कृषि और गोपालन एक–दूसरे के पूरक हैं। जब एक मनुष्य कृषि करता रहेगा तब तक यदि वह अपना कल्याण चाहता है तो उसे गोपालन भी करना पड़ेगा। इसीलिए महर्षि ने गौरक्षा के लिए एक सभा बनाई थी जिसका नाम **''गो कृष्यादि रक्षिणी सभा''** रखा था। दु:ख का विषय है कि आज मानव ने कृषि कर्म तो चालू रखा किंतु गोपालन करने का ध्यान कम कर दिया और बैलों की जगह ट्रैक्टरों से जमीन जोतने लगा और गाय के दूध, घी, दही, मलाई की जगह माँस खाना व शराब पीना आरंभ कर दिया। आज मानव अपने हर स्तर से चाहे व बल हो, बुद्धि हो, या चरित्र हो, गिरता चला गया और आज उसकी स्थिति ये हो गई है कि वह विनाश के कगार पर खड़ा है। किस समय संसार का विनाश हो जावे कोई कुछ नहीं कह सकता। इस बात को महर्षि दयानन्द ने पहले ही अच्छी तरह भाँप लिया था कि मानव मात्र का विनाश या स्तर गिरने के सबसे मुख्य कारण दो ही हैं। पहला वेदों का पढ़ना–पढ़ाना छूट जाना और दूसरा गोपालन पर ध्यान न देना।

पाँच हजार वर्षों पहले जब यह दोनों चीजें अपने पूरे यौवन पर न थीं। तब हर बच्चा चाहे वह राजा का हो या रंक का, पाँच या आठ वर्षों के बाद गुरुकुल में चला जाता था। वहाँ आचार्य की गोद में बैठकर वेदाध्ययन करता था और पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ आचार्य और गो सेवा का कार्य करता था और शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक व चारित्रिक बल से परिपूर्ण होकर जब पूर्ण यौवन अवस्था प्राप्त करके पच्चीस वर्ष बाद वह गृहस्थ में आता था तब वह अपने गृहस्थ जीवन में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करते हुए आनन्दित व सुखी बना रहता था। उस समय सब लोग वेद मार्ग पर चलते थे और गऊ के शुद्ध दूध का पान करते थे। तब आपस की कलह, द्वेष, घृणा, लड़ाई–झगड़ा वैमनस्य होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। उस समय सब लोग, सदाचार, संयमी, परिश्रमी, ईमानदार, कर्तव्यपरायण, दयालु, परोपकारी, न्यायकारी आदि मानवीय गुणों से विभूषित होते थे और परस्पर सद्व्यवहार रखते हुए प्रेमपूर्वक रहते थे। तब सारा विश्व **वसुधैव कुटुम्बकम्** के समान था। मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार के बाद गौरक्षा के प्रश्न को ही सबसे अधिक महत्त्व देते थे। उनके विचार से मानव मात्र का कल्याण वैदिक पथ पर चलने से तो होगा ही, इसके साथ ही उसका हित व उपकार गोपालन से ही सम्भव है। इस बात को वे भली–भाँति जानते थे कि कृषि जितनी मानवमात्र के लिए जरूरी है उतनी ही जरूरी गोपालन है। इसका कारण कृषि और गोपालन एक–दूसरे के पूरक हैं। जब एक मनुष्य कृषि करता रहेगा तब तक यदि वह अपना कल्याण चाहता है तो उसे गोपालन भी करना पड़ेगा। इसीलिए महर्षि ने गौरक्षा के लिए एक सभा बनाई थी जिसका नाम ''गो कृष्यादि रक्षिणी सभा'' रखा था।

महर्षि दयानन्द वही प्राचीन सुखद व आनन्दपूर्ण स्थिति विश्व में पुनः लाना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने नारा दिया था कि **'वेदों की ओर लौटो'** यानी वेदों को पढ़ना–पढ़ाना व सुनना–सुनाना पुनः आरंभ करो, साथ ही गोपालन पर विशेष ध्यान दो। इन दोनों कार्यों के द्वारा ही स्थिति के बदलने का सही उपाय समझकर ऋषि जी ने इन कार्यों पर विशेष बल हीं नहीं दिया बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया। वेद प्रचार के लिए महर्षि ने क्या–क्या किया यह किसी से छुपा नहीं है, इसे सारा संसार जानता है। उन्होंने अपने जीवन में खाना–पीना, सोना–जागना, उठना–बैठना सब कार्यों को गौण समझकर वेद प्रचार करना ही मुख्य कार्य समझा। वेद प्रचार के लिए कितनी ही बार जान को जोखिम में डालकर वेद विरोधियों से लड़ना पड़ा। सैकड़ों शास्त्रार्थ किए, सत्रह बार विष पिए, विरोधियों की गालियाँ सुनी, ईंट–पत्थर खाए, मान–अपमान सहा, पहाड़ों व जंगलों की खाक छानी फिर भी वेद प्रचार करने से विचलित व विमुख नहीं हुए। इसी वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सन् 1875 ई. में उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना सब आर्यों का यानी सभी श्रेष्ठ पुरुषों का सिर्फ धर्म ही नहीं बल्कि परम धर्म है।'' बताकर अपनी अभिलाषा प्रकट करते हुए इस कार्य पर विशेष बल दिया ताकि आर्य समाजी इस कार्य को करना न भूलें।

गाय की रक्षा के लिए महर्षि ने क्या–क्या प्रयास किए इसके बारे में काफी लोग अनभिज्ञ हैं, इसके ऊपर मैंने कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया है, कृपया पाठकगण इससे लाभ उठायें।

महर्षि जी अच्छी प्रकार जानते थे कि वेद जैसे अपनी शिक्षाओं से मनुष्य को चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को परोपकार की भावना से करते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है। उसी प्रकार गऊ भी अपने शुद्ध दूध, घी, दही, छाछ से मनुष्य के शरीर को हृष्ट–पुष्ट तथा बुद्धि को शुद्ध व पवित्र बनाती है जिससे मनुष्य धर्म के कार्य करता है। मनुष्य गऊ के पंचगव्य से अनेक प्रकार की दवाइयाँ बनाकर तथा बैलों द्वारा कृषि व माल ढोने का काम करके धन उपार्जन करता है तथा शरीर की शक्ति व पवित्र बुद्धि से अपनी सब कामनाएँ (इच्छाएँ) पूरी करता है तत्पश्चात् सब काम धर्मानुसार करने से मोक्ष पाने का भी अधिकारी बन जाता है। इसलिए वेद के प्रचार के समान गऊ पालन भी उपयोगी व लाभदायक है। इस बात को महर्षि ने समझा और दोनों की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

सबसे पहले महर्षि ने गौमाता की दयनीय दशा देखकर, **'गोकरुणानिधि'** नाम की एक लघु पुस्तिका लिखी, जिसमें गोहत्या पर अपनी हृदय की वेदना ही प्रकट नहीं की बल्कि फूट–फूटकर रोये भी। ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था व विश्वास रखने वाला व्यक्ति भी ईश्वर को यहाँ तक कोसा कि ''हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर जो बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इनके लिए तेरी न्याय सभा बंद हो गई है? क्यों नहीं इनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान देता और इनकी पुकार नहीं सुनता। क्यों इन मांसाहारियों की आत्माओं में दया, प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कर्मों से बचें।''

गऊ मानव मात्र के लिए कितनी उपयोगी व जरूरी है, वह अपनी उम्र में कितने हजार लोगों का पालन–पोषण कर देती है, यह सब दर्शाया है। यदि गऊ के हत्यारे इस पुस्तिक को पढ़ लेंवे और चिंतन–मनन करें तो कोई पत्थर हृदय ही होगा जो पिघल न जाए। खेद का विषय है कि आज की सभी गौ हत्यारी सरकारें जो गो पालक कृष्ण को भगवान का रूप मानती हैं और महर्षि दयानन्द, महात्मा गाँधी और विनोबाभावे के आदर्शों पर चलने वाली कहलाती हैं, फिर भी गौ हत्या बंद नहीं करतीं। इसीलिए ये सभी सरकारें सिर्फ निन्दीय ही नहीं, भर्त्सना करने योग्य हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने सबसे पहली गऊशाला राव–युधिष्ठिर रेवाड़ी नरेश के द्वारा रेवाड़ी में खुलवाई थी। इसके साथ ही हजारों गऊशालाएँ पूरे भारत में चल रहीं हैं। यह सब महर्षि दयानन्द महाराज की कृपा का फल है। अतः हम सबको गऊ भक्त बनकर महर्षि दयानन्द महाराज का सपना साकार करना चाहिए। इसी में विश्व की भलाई है।

आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरि.)
चलभाष : 9813845774

पत्र/कविता

पैर पकड़ कर और के, पद पाना बेकार।

तू तो मेरे पास है, पर मैं तुझसे दूर।
मैं अबोध मानूं नहीं, समझाता भरपूर।।

मेरे भीतर बैठकर, समझाता भरपूर।
मैं मूरख कितना बड़ा, सभी सीख से दूर।।

मैं और मेरा ईश्वर, मेरे भीतर साथ।
उसे ढूंढता फिर रहा, कहाँ मिलेंगे नाथ।।

दुँनिया भर में घूमता, जैसे कोय अनाथ।
मेरे भीतर ही बसे, मेरे सर पर हाथ।।

ढोल बजाता फिर रहा, कोय नहीं बतलाय।
भीतर मेरे रह रहा, कोय नहीं समझाय।।

जब कभी किसी और का, करते हो अपमान।
उसी समय तुम खो रहे, अपना ही सम्मान।।

दौलत देखे और की, करते उसका मान।
अपनी नजरों में तभी, खोते हो ईमान।।

बहस करके मूर्ख से, अपना समय गवाय।
हाथ जोड़ो बहस बिना, शान्ति मन की पाय।।

पैर पकड़ कर और के, पद पाना बेकार।
अपने पैरों पर चले, हों सपने साकार।।

बुरा मुझे जो भी मिला, सीख सही दे जाय।
जीवन हांडी काठ की, फिर से ना चढ़ पाय।।

नरेन्द्र आहूजा विवेक
602 जी.एच. –53, सैक्टर –20,
पंचकूला (हरियाणा)

यह मुफ्त इलाज अद्भुत लेकिन .....?

आयुष्मान भारत के नाम से प्रधानमंत्री ने जिस आरोग्य योजना को शुरु किया है, वह निश्चय ही दुनिया की सबसे बड़ी योजना है। दुनिया का कोई देश ऐसा नहीं है, जहां करोड़ों लोगों को पांच लाख रु. तक का इलाज हर साल मुफ्त में कराने की सुविधा मिले। दस करोड़ गरीब परिवार याने 50 करोड़ लोग अब भारत में अपना इलाज मुफ्त में करवा सकेंगे। इतने लोग तो कई देशों की जनसंख्या को मिला देने पर भी नहीं बनते। इसके लिए भाजपा सरकार और उसके स्वास्थ्य मंत्री बधाई के पात्र हैं।

डर यह है कि यह लोक–कल्याणकारी योजना कई अन्य अभियानों की तरह सिर्फ नारेबाजी बनकर न रह जाए! क्या भारत में 50 करोड़ लोगों के इलाज के लिए पर्याप्त डॉक्टर और अस्पताल हैं? हमारे अस्पताल गांवों से इतने दूर हैं कि ग्रामीण मरीजों के पास उन अस्पतालों और डॉक्टरों तक पहुंचने के लिए ही पैसे नहीं होते। सरकार को सबसे पहले देश के हर जिले में बड़े–बड़े अस्पताल खोलने चाहिए और हर डॉक्टरी पास करनेवाले छात्र को अनिवार्य रुप से गांवों के अस्पतालों में सेवा के लिए भेजना चाहिएँ। सिर्फ एलोपेथिक नहीं, आयुर्वेदिक, यूनानी, प्राकृतिक चिकित्सा और होमियोपेथिक इलाज की सुविधा भी मरीजों को मिलनी चाहिए। सच्चाई यह भी है कि 100 करोड़ लोग भारत में ऐसे हैं, जो अपनी बीमारी पर पांच लाख रु. साल खर्च नहीं कर सकते। दुनिया की यह सबसे बड़ी लोक–कल्याणकारी योजना भ्रष्टाचार का जरिया न बन जाए। अतः सरकार को गैर–सरकारी डॉक्टरों और अस्पतालों को कड़े नियंत्रण में रखना होगा। यदि यह अभियान सफल हो जाए याने देश में शिक्षा और स्वास्थ्य ठीक हो जाए तो भारत को महाशक्ति बनने से कौन रोक सकता है ?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vadik@gmail.com

****

सिद्धांतहीनता की विडंबना...

आज राजनैतिक विवशता इतनी अधिक सिद्धान्तहीन व आत्मघाती होती जा रही है कि हिंदुत्व की रक्षार्थ आक्रान्ताओं के वंशजों को जिहादी जनून से ग्रस्त होने पर भी स्वीकार किया जा रहा है। यह कैसी विडंबना है क्या मुसलमान के बिना हिंदुओं के अस्तित्व को असुरक्षित मानने का विचार स्वीकार करने के योग्य है? करोड़ों भारत भक्तों को देश के अनेक महापुरुषों के महान कार्यों व उद्देश्यों से प्रेरित होने के स्थान पर उनको भ्रमित करके उनमें ऐसे नकारात्मक भाव का बीजारोपण क्यों किया जा रहा है ?

क्या इस प्रकार की विसंगतियों से हमारा समाज हतोत्साहित नही हो रहा? राष्ट्रवादी समाज में इतनी सामर्थ्य हैं कि वह शौर्य, साहस व पराक्रम से परिपूर्ण होने पर भी हिंसक व वैमनस्यता बढ़ाने वाले धर्मांधों के प्रति सहिष्णु व उदार एवम अहिंसक बने रहकर अपनी आस्थाओं व आत्माभिमान से जीने के लिये जागरूक है।

प्राचीन अश्वमेघ यज्ञ की संस्कृति को तो भुला ही दिया गया है और अब अस्तित्व व अस्मिता की रक्षार्थ संघर्ष करने वाली मानसिकता को शिथिल करके मनोबल को तोड़ा जा रहा है।

इसी के दुष्परिणामस्वरूप हमें और हमारे नेतृत्व को अन्याय, अत्याचार, असत्य और अधर्म के सामने आत्मसमर्पण करने पर विवश होना पड़ रहा हैं?

जब हमारी भूमि के संस्कार, संस्कृत व संस्कृति त्रिकालजयी तत्वों में भारतीय समाज सहित सम्पूर्ण मानवता का उत्थान करने की भरपूर क्षमता है तो फिर क्यों नहीं इसका व्यापक प्रसार व प्रचार करके ऐसे विस्फोटक संकट से सुरक्षित होते हुए विश्व को भी सार्थक संदेश देकर मानवता के उज्ज्वल भविष्य की कामना की जाय? इसके साथ ही यह भी उचित होगा कि नकारात्मक विचार व दर्शन वालों को भी आज के प्रगतिशील व परिवर्तनशाली वैज्ञानिक युग में अपने को ढाल कर "जियो और जीने दो" के सिद्धान्त को अपनाने का सकारात्मक परिचय देना होगा।

विनोद कुमार सर्वोदय
गाज़ियाबाद

****

स्वास्थ्य के लिए लाभदायक आंवला

आंवला या अमालाकी को सबसे अधिक आयुर्वेदिक घटक के रूप में कहा जा सकता है। यह भोजन और दवा दोनों है।

आंवले के लाभः

यह कई बीमारियों के लिए उपचार प्रदान करता है और इसलिए इसका व्यापक रूप से आयुर्वेदिक उपचार में उपयोग किया जाता है। आमला के स्वास्थ्य लाभ में निम्न शामिल हैं:

आँखों के लिए: शहद के साथ आंवले का रस पीने से दृष्टि में सुधार होता है। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि यह अंतर–ओक्यूलर तनाव को कम कर, निकटता और मोतियाबिंद में सुधार करता है। विटामिन ए और कैरोटीन मेक्यूलर डिएनेजरेशन, रात अंधापन को कम करता है।

मधुमेह के लिए: आंवला, कोशिकाओं के पृथक समूह को उत्तेजित करता है जो हार्मोन इंसुलिन को छिपाने के साथ–साथ मधुमेह रोगियों में रक्त शर्करा को कम करते हैं और शरीर को संतुलित और स्वस्थ रखते हैं।

पाचन के लिए: आंवला में बहुत अधिक मात्रा में फाइबर है जो आंतों के माध्यम से भोजन को ले जाने में मदद करता है और आपके मल त्याग को नियमित रखता है।

दिल के लिए: यह हृदय की मांसपेशियों को भी मजबूत बनाता है। अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल बिल्डअप को कम करने से, आंवले में मौजूद क्रोमियम आथरोसक्लेरोसिस की संभावना को कम कर सकता है। रक्तवाहिकाओं और धमनियों को साफ करके परिसंचरण और अंगों और कोशिकाओं के ऑक्सीजन को बढ़ाता है।

बालों के लिए: आंवला बाल के टॉनिकों में प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह बाल विकास और बाल रंजकता को बढ़ाता है। ताजा आंवला खाने या बालों की जड़ों पर इसका पेस्ट लगाने से बाल विकास और रंग में सुधार होता है।

मेटाबोलिक गतिविधि: आंवले में प्रोटीन भी होते हैं। सेलुलर विकास, मांसपेशियों के विकास, अंग स्वास्थ्य, और अन्य चयापचय गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए प्रोटीन आवश्यक है।

मूत्रवर्धक गतिविधि: आंवला थोड़ा मूत्रवर्धक भी है, जो आवृत्ति और पेशाब की मात्रा बढ़ाता है। मूत्रवर्धक पदार्थ हमारे गुर्दे को स्वस्थ रखने, मूत्र संक्रमण और गर्भाशय में संक्रमण को रोकने के लिए आवश्यक होता है।

मासिक धर्म में ऐंठन के लिए: आंवले में मौजूद कुछ खनिज और विटामिन सामूहिक रूप से मासिक धर्म के ऐंठन के उपचार में बहुत उपयोगी होते हैं।

www.myupchar.com से साभार

****

डी.ए.वी. जसोला विहार में आयोजित हुआ हिन्दी सप्ताह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल जसोला विहार दिल्ली में हिंदी विभाग की ओर से हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस समारोह में कक्षा पहली से लेकर 12वीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। पूरे सप्ताह होने वाली प्रार्थना सभा हिंदी भाषा पर आधारित थी। देश–विदेश के समाचारों से लेकर प्रत्येक दिवस हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा संवादों, कविताओं से संबंधित रोचक प्रस्तुति की गई। मुख्य कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना द्वारा किया गया।

हिंदी भाषा के उद्भव, विकास तथा वर्तमान स्थिति पर चर्चा करने के पश्चात् सामाजिक विषय पर आधारित एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् श्री राम भजन की प्रस्तुति द्वारा विद्यार्थियों ने सभी को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। कुछ एक हास्य व्यंग्य तथा गंभीर विषयों पर आधारित कविताओं के सस्वर गायन के पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा हिंदी भाषा तथा संस्कृति के प्रचार–प्रसार पर आधारित एक अन्य लघु नाटिका की प्रस्तुति भी की गयी।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य डॉ. वी.के. बर्थवाल ने विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के महत्त्व तथा भाषा के शुद्ध प्रयोग हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं तथा उनका उत्साहवर्धन किया। हिंदी विभाग अध्यक्ष श्रीमती वीना साहनी ने भी विद्यार्थियों को संबोधित कर शुद्ध हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु उनका उचित मार्गदर्शन किया तथा इस आयोजन के सफलतापूर्वक समापन के लिए विद्यार्थियों तथा शिक्षिकाओं को शुभकामनाएँ दीं।

डी.ए.वी. सैक्टर -14, गुरुग्राम में हुई ताईक्वांडो तथा कराटे खेलकूद प्रतियोगिता

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–14 गुरुग्राम में जिलास्तरीय टाईक्वोंडो तथा करॉटे खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन भारत के स्कूल खेल संघ (School Games Federation of India) द्वारा किया गया। इस त्रिदिवसीय खेल प्रतियोगिता में लगभग 50 विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी श्री दिनेश शास्त्री ने किया।

मुख्य अतिथि श्री दिनेश शास्त्री ने अपने वक्तव्य में डी.ए.वी. संस्था की तारतम्य तथा निश्छल प्रक्रियाओं की प्रशंसा करते हुए विद्यालय की प्राचार्या को ओजस्वी, मनस्वी, तपस्वी तथा प्रबुद्ध कहकर विद्यालय तथा सभागार में उपस्थित जनों का स्वागत व अभिनन्दन किया। उन्होंने खेल के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि खेल बच्चों को आत्मरक्षा के लिए प्रेरित करते हैं तथा स्वावलंबन का पाठ भी पढ़ाते हैं।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा एरी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए खेल को पाठ्यक्रम का अहम हिस्सा बताया तथा खेल प्रतियोगिता के दौरान खेल को स्वस्थ भावना के साथ खेलने का संदेश दिया।

दयानन्द मठ, चम्बा के 38वें वार्षिकोत्सव पर शारदीय यज्ञ का आयोजन

शारदीय यज्ञ का आयोजन दयानन्द मठ चम्बा के वर्तमान अधिकारियों द्वारा 7 अक्टूबर 2018 से 9 अक्टूबर 2018 तक दयानन्द मठ,चम्बा का तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत आदर्श विद्यालय के बच्चों द्वारा योगासनों की प्रदर्शिनियाँ, योग पिरामिड, भाषण, लोकल कल्चर, लोकनृत्य, कुरीतियों पर आघात करने वाली नाटिकाओं आदि की झांकियाँ प्रस्तुत की गई। वार्षिकोत्सव के यज्ञ की पूर्णाहुति 10 अक्टुबर को हुई। इस कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में आर्य जन पधारे जिन्होंने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर प्रभु की कृपा से, दिव्यात्माओं के आशीर्वाद से, देवों को तृप्त करने के लिए, पितरों के तर्पण के लिए, प्राणीमात्र के कल्याण के लिए यज्ञ में आहुतियाँ समर्पित कीं।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. आउट्रम लाइन्स ...

के प्रधानाचार्य और अध्यापकों ने भी भाग लिया।

प्रधानाचार्या श्रीमती नीरा खेड़ा ने अतिथियों का स्वागत कर उन्हें प्रदर्शनी का अवलोकन करवाया। महात्मा गांधी जी की जीवनी को बारह कक्षाओं में प्रदर्शित किया। प्रथम कक्षा में गांधी जी का जन्म और उनके बचपन की घटनाओं को दर्शाया गया। इस प्रकार क्रमशः गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका का वृत्तांत, भारत में वापसी, साबरमती आश्रम की स्थापना, दांडी मार्च, अंग्रेजों भारत छोड़ो, गांधी जी का प्यारा चरखा आदि बहुत सी घटनाओं को प्रदर्शित किया। गांधीजी के स्वदेशी भारत के स्वप्न को पूर्ण करने हेतु एक कक्षा में खादी विक्रय की भी व्यवस्था की गई।

विशिष्ट अतिथि श्री एस.के. शर्मा ने प्रधानाचार्या और विद्यालय के द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा की। अभिभावकों ने भी इस अवसर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाया। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य था कि हम सभी जन मिल कर गांधी जी के द्वारा बताए अहिंसा, सत्य आदि मूल्यों का अनुसरण करें और प्रेम से मिलकर अपने भारत को स्वच्छ व समृद्ध बनाएं।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 10/11-10-2018

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालन्धर में मनाया गया हिन्दी दिवस

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय में लिट्रेरी सोसायटी द्वारा हिन्दी दिवस मनाया गया। यह हिन्दी दिवस दिवंगत कवि गोपाल दास नीरज को समर्पित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन, रजिस्ट्रार डॉ. सुषमा आर्या, डीन डॉ. देशबंधु गुप्ता व डॉ. जसबीर ऋषि ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। हिन्दी दिवस पर सीबीएम की स्टूडेंट रिया शर्मा की किताब कविता संग्रह का विमोचन किया गया।

उपकुलपति डॉ. महाजन ने विद्यार्थियों को हिन्दी पर बधाई देते हुए कहा कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का काम करती है। विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोले जानी वाली भाषा हिन्दी है। आज गुगल और दूसरे सर्च इंजन भी हिन्दी में पाठ्य सामग्री व अन्य जानकारी हिन्दी में उपलब्ध करवा रही है।

कुलसचिव डॉ. सुषमा आर्या ने कहा कि भारत की आजादी में हिन्दी पत्रकारिता का अहम योगदान रहा है, हम भारतीय हिन्दी भाषा द्वारा अपनी भावनाओं को बड़े प्रभावी तरीके से व्यक्त करते हैं। यही वजह है कि आज पूरी दुनियाँ में हिन्दी सिनेमा को बड़े पैमाने पर पसंद किया जाता है। विद्यार्थी हिन्दी भाषा पर अपनी पकड़ मजबूत बनाकर बेहतर भविष्य बना सकते है। कार्यक्रम में डॉ. कपिल व अन्य स्टॉफ सदस्य उपस्थित रहे।

एस.एल. बावा डी.ए.वी. बटाला में सेमीनार का आयोजन

एस.एल. बावा डी.ए.वी. कॉलेज, बटाला में 'अंधविश्वास रहित भारत' विषय पर विशेष सैमीनार का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. वीरेन्द्र भाटिया की अध्यक्षता में हुई गोष्ठी के आरम्भ में प्रो. डॉ. पुरुषोत्तम कुमार शर्मा ने मुख्यातिथि श्री शक्ति खुल्लर (स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति सदस्य) का संक्षिप्त परिचय किया। गोष्ठी के दौरान कॉलेज की आर्यसमाज समिति की अध्यक्षा डॉ. किरण बाला ने पी.पी.टी. द्वारा समाज में व्याप्त विभिन्न अंधविश्वासों की विस्तृत जानकारी देते हुए इनके पीछे छिपे वैज्ञानिक तर्कों के बारे में बताया और दिव्य जीवन जीने के लिए शिक्षा और आत्मविश्वास का सहारा लेने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा और आत्मविश्वास का सहारा लेने के लिए प्रेरित किया।

मुख्यातिथि श्री शक्ति खुल्लर ने अंधविश्वासों को दूर करने और वेदों का अनुकरण करने पर बल दिया। प्रो. संजीव कौशल ने कहा कि घरेलु स्तर पर व्याप्त विभिन्न अंधविश्वास अब काफी हद तक वैज्ञानिक तर्कों से खत्म हो चुके हैं और भविष्य में हम अंधविश्वास रहित भारत की आशा कर सकते हैं परन्तु इसके लिए पहल हमें स्वयं ही करनी होगी। प्रो. डॉ. मंजुला उप्पल ने कहा कि आर्य समाज और डी.ए.वी. संस्थान सदैव से समाज की विभिन्न बुराइयों को दूर करने के लिए वचन बद्ध हैं और इसी क्रम में डी.ए.वी. संस्थाएँ शिक्षा के द्वारा इस बुराई को भी समाप्त करने के लिए कार्यरत हैं

प्रधानाचार्य ने कहा कि पखण्ड ने देश को कमज़ोर कर दिया है। समय–समय पर संतों ने समाज को धर्म की आढ़ में हो रहे शोषण से बचाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि जीवन को सफल बनाने के लिए मेहनती और कर्मयोगी होना ज़रूरी है।

प्रो. सुनील जेतली ने आए हुए अतिथियों का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल अबोहर में शिक्षकों को याद दिलाया गया उनका उत्तरदायित्व

एल आर एस डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर में शिक्षक दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि श्रीमती कुसुम खुंगर, (ए.आर.ओ.), प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा, तथा विशिष्ट अतिथियों को श्रद्धाभाव से पुष्प भेंट किए। शिक्षकों द्वारा इस अवसर पर "दया कर दान विद्या का, हमें परमात्मा देना... भजन भी प्रस्तुत किया गया।

प्रिसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा ने प्रधान श्री पूनम सूरी का संदेश मंच से पढ़ा। अपने

संबोधन में प्रिंसीपल शर्मा ने कहा कि शिक्षक दिवस के अवसर पर हमें एक विशेष प्रण करना चाहिए और जिसे हम अपने जीवन में ढाल सकें व देश के भावी कर्णधारों का भविष्य उज्ज्वल बना सकें।

ए.आर.ओ. श्रीमती कुसुम खुंगर ने कहा कि समाज द्वारा भी शिक्षकों से सर्वोच्च आचरण की अपेक्षा की जाती है। नैतिक मूल्यों के संकट की इस घड़ी में जब देश का बौद्धिक व प्रबुद्ध वर्ग अपनी मूल चेतना से हट कर निष्क्रिय सा हो गया है, ऐसे में शिक्षकों का दायित्व और भी बढ़ जाता है।

अध्यापक सुखदेव सिंह द्वारा 'आज के परिवेश में अध्यापक की भूमिका' विषय पर सामूहिक चर्चा भी आयोजित की गई। समस्त स्टाफ को स्कूल की ओर से उपहार दिए गए। राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**